Digitized by eGangotri

भूगोलपंजाब

PRATAP SINGH MUSEUM SRINAGAR
Gl. Hum.
933

पंजाबदेशीय पाठशालाओंके विद्यार्थियोंके

अभ्यासके लिये श्रीयुत कप्तान हालरेड साहब

बहादुर डाईरक्टर पबलिक

इंस्ट्रक्शनस

मालिक

पंजाब

प्रभृतिके आज्ञानुसार

सन् १८७० ईसवीमें

यंत्रालय सरकारीमें

छापा गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भूगोल पंजाब

इस देश का पंजाव नाम रखने का कारण यह है कि पहले सूबा लाहौर का नाम पंजाव था अर्थात् जब अकबर शाह के समय में सूबों की बांट हुई तब पांच नदियों के कारण लाहौर सूबे का नाम पंजाव रखा गया इसका फैलाव सतलुज नदी से सिंधु नदी तक लंबाव में १८० कोस और भिम्भर से चोखंडी तक चौड़ाव में ब्यासी ८६ कोस था अकबर शाह के समय में इसकी सीमा यह नियत थी पूर्व में सरहन्द उत्तर में कश्मीर दक्षिण में अजमेर पश्चिम में मुलतान और इस सूबे में जो पांच नदियां अर्थात् सतलुज ब्यास रावी चनाव जहलम बहती हैं इस कारण से इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सूबेका नाम पंजाब रखा गया था और हिमालय पर्बतसे यह नदियां निकलती हैं— पर अब हमारे समयमें दुआबा सिंध और सूबा मुलतान और कमिश्नरी अम्बाला और कमश्नरी दिल्ली और कमिश्नरी हिसार भी इस पंजाबकी ही आज्ञामें आधीन हैं इसलिये जो इतिहास वा भूगोल वा नकशा इन सूबों समेत होगा उसे हम पंजाबका इतिहास वा भूगोल वा नकशा पंजाब कहेंगे और इस सारे राज्यके घेरेको अहाता पंजाब बोलते हैं— इसहाते की राजधानी लाहौर नगर है जहां जनाब श्रीयुत नव्वाब लफ़टनंट गवरनेर बहादुर पंजाब देशाधिकारी सुशोभित हैं अर्थात् निवास रखते हैं— इसलिये इस भूगोल में सारे पंजाब हाते का संक्षिप्त अवश्यक वृत्तांत जो इससे संबंध रखते हैं वह लिखा जाता है यद्यपि इतिहास और प्रबंधों के होनेसे भूगोलकी सुषमा अर्थात् बड़ी शोभा थी तौभी विस्तारके डरसे छोड़ दिये गये हैं और अब हमारे समय की पंजाबकी सीमायें हैं॥ ❋

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पंजाब

पंजाब के उत्तर और पूर्वकी ओर पर्वत और कश्मीर है और उसके पूर्व और दक्षिण की ओर मुमालिक मग़रबी व शमाली अर्थात् पश्चिमोत्तर देश और दक्षिणमें राजपूताना बीकानेर भटयाना बहावलपुर सिंध और पश्चिम में काबुल वा अफ़ग़ानिस्तान है॥ ❋

राज्यका वर्णन

सौवर्ष हुवे सिक्खों ने बलपाकर पुराने पंजाब को अपने आधीन कर लिया और रणजीत सिंह के समयमें वह प्रबल राज्य होगया और उसके मरे पीछे सिक्खों ने बड़ी उपाधि उठाय निष्कारण सरकार अंगरेज़ी से बीगाड़ किया जिसके परिणाम में आप बिगड़ गये॥ ❋

पहली लड़ाई

इसका संक्षिप्त वर्णन यह है कि दिसंबर सन् १८४५ ईसवीके प्रारंभ में सिक्खों की फ़ौज ख़ालसा तोप गोला आदि युद्ध का सामान अपने साथ ले इक्कीस हज़ार सिपाही के लग भग रणजीत सिंह को अपना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अधिपति अर्थात् सरदार बनाया सतलुजनदी के पार हो कर सरकार अंग्रेज़ीके देशमें फसाद अर्थात् उपाधि वा झगड़ा मचानेलगीथी इसलिये सरकार अंग्रेज़ीकी पहली लड़ाई मुदकीपरहुई यह फ़िरोज़पुर की तहसीलमें एक कसबाहै इसलड़ाई में गोरोंकी बहुत सेना और हिंदुस्तानी मारीगई और बहुत अफ़सर भी काम आये फिर अंग्रेज़ी वीरसेनाने इस स्थानमें लड़ाई करके शत्रुका पराजयकिया अर्थात् दुश्मनको हरादिया और कई हज़ारसिक्ख मारेगये और तोपें गोले डेरे आदि उनका सामान युद्धका सरकारके हाथ में आया॥ ❋

दूसरी लड़ाई

जब सरकारी सेनाने देखतीअंखें सिक्खोंका गाढ पराजयकिया अर्थात् शिकस्त फ़ाहशदी तब उनकी सहायताके लिये और सिक्ख लोगबहुत सेनासाथलेकर गये और लुधाने में पहुंच उपाधि मचानी प्रारंभ की और उस सरकारी सेनाने जो हरीके पत्तन पर पड़ीथी उनका सामना किया यह दूसरी लड़ाई लुधाने परथी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हुई पर यहांजो सेना थोड़ीथी और सेनाका एक बड़ा विभाग फ़िरोज़पुरमैं सिक्खोंका सामनाकर रहाथा इसकारण सरकारी सेना यहां हारका ढंग दिखाय^ फ़िरोज़पुरकी ओर भागी और सिक्खोंने सरकारी सेनाको हारी और भागीजान उनका पीछा जो किया तो सरकारी सेनाने फ़िरोज़पुरके पासपहुंच उन्हें^ चारों ओरसे घेर जिचकरके खखेड़ा उठानेका बहुत अच्छा दण्ड दिया ॥ ❋

तीसरी लड़ाई

तीसरी लड़ाई अलीवाल स्थानपर २८ जनवरी सन् १८४६ ईस्वीको हुई उसका संक्षिप्त वृत्तांत यह है बीस हज़ार अकाली सिक्ख छप्पन तोपें साथलेकर सिक्खों की सहायताके लिये सतलुज नदीके पारहो खालसा की सेनामें जामिले इसयुद्धमें सिक्खों की पचास^ या साठ तोपें सरकार अंगरेज़ी के हाथ आई और सि ख लोग बहुत मारेगये इसदशाको देख राजा लाल सिंह जोखालसा की हिमायत के लिये बीसहज़ार^ सवार और थोड़ीतोपें लियेहुवे उनकी पीठपर खड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

या जल्दी लाहोर को भागा और उसपुल को जो सिक्खों ने सतलुज नदीपर अपने आनेजाने के लिये बांध रक्खा था तोड़गया इससे कई हज़ार सिख नष्ट होगये कुछतो नदीमें डूबगये और जो बचेथे वे अंग्रेज़ी सेना के हाथ से मारेगये ॥ ॥

चौथीलड़ाई

जब खालसा की सेना युद्ध की सामग्रीसे सब मोरचेखोर कर फिरयुद्ध के लिये सन्नद्ध होय उद्यत हुई इसकारण सरकारका विचार हुआ कि सतलुजपार होकर इनउपाधि सिक्खोंको पराजय करना चाहिये तब १० फर्वरी सन् १८४६ ईस्वी को सुबरांवा स्थान पर चौथी लड़ाई तोपकी प्रारंभ हुई और आधे घंटे में सरकारी सेनाने सिक्खोंके मोरचे तोड़डाले फिर शीघ्र अर्थात् जल्दी आज्ञा हुई कि प्यादोंकी सेना नदी पर उतरकर शत्रुओंपर चढ़ाईकरे उसी समय गोरोंकी पलटन उनपुलोंके मार्गसे जोकई स्थानोंमें सरकारने बंधवादिये थे उतरगई और अच्छी शूरबीरता दिखाई कि सिक्खों की सेना सामनेकी सामर्थ न रखभागी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गई साठ तोपसमेत उनकी सबसामग्री सरकार अंग्रेज़ीके भागमें आई॥ ❋

इसकेपीछे सरकार अंग्रेज़ी और महाराज दिलीपसिंह पंजाबके राज्यके स्वामी के बीचमें मैत्री अर्थात् सुलह होगई और आगेके लियेदोनों ओर से संधिपत्र अर्थात् सुलहनामा लिखागया और प्रजाके नाम ख्यातिपत्र अर्थात् इश्तहार जारीहोगये और अमृतसर में राजागुलाबसिंह की मुलाक़ात श्रीयुत गवरनरजनरल हारडेंग साहब बहादुर से हुई और मिसटर लारनस साहब बहादुर जो दिल्लीके मजिसट्रेट और कलकटरथे फ़िरोज़पुर और मुलकदुआबह बस्त अर्थात् उसदुआबेके देश के जोब्यास और सतलुज के बीचमें है कमपनीके अधिकारपर अधिष्ठित अर्थात् मामूर हुवे और राजा दिलीपसिंह को उनके पिता महाराजा रणजीतसिंह का स्थानापन्न किया अर्थात् उनकी राज्य गद्दीपरबठाया और अंग्रेज़ीसेनाके व्यय अर्थात् खरचके पलटेमें अथवा चट्टीका डेढ़करोड़ रुपया लेना ठहरा॥ ❋

लोकुई के पीछे सन् १८ ४८ ईस्वीमें ऐसे ऐसे प्रमाण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

र्थात् घारत और संधिपत्र और प्रबंध होनेपर कि एक साहब रजीडंट लाहौरके सारे राज कार्य में मंत्रीकी तरह काम करतेथे और सभप्रकारसे लाहौरके शुभचिन्तकथे फिर भी लाहौरके सरदारों और राणीचंदा महाराज दिलीप सिंहकी माने उपाधि उठाने और अंग्रेज़ोंके हननकरनेका विचारकरके उनके खिदमतगारों अर्थात् सेवकों और मिस्कोटद्वर के खानसामाओं को बड़ी जागीरें और महद्धी पारितोषिक अर्थात् गरानकीमत इनआम देनेकी प्रतिज्ञाकरके और कईहज़ार रुपैये नकद देकर अपनेमें मिलाय उनसाहबान् अंग्रेज़ोंको जो लाहौरमें आयेहुवेथे विषदेनेका विचार किया और जबयह बात खुलगई और न्याय सिद्ध निश्चयहोगई तबराणी साहब भरतखंडको भेजीगई और सरकारी नौकर जो इसकुकर्म में मिलगये थे उन्हें फ़ांसी प्राप्तहुई॥ ॥

युद्ध मुलतान

इतनेमें मुलतानके सूबेदार मूलराजक्षत्रियने सरकारसे बिगाड़किया और उनदो प्रतिष्ठित साहबोंको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जोसरकार लाहौरकी ओरसे कान्ह सिंह सूबेदार हाकिमको ख़ज़ानेकी तालियां और दुर्गभुक्ति अर्थात् किलेका क़ब्ज़ा दिलानेको गयेथे मारडाला इसलिये यहलड़ाई उठी ॥ ❋

और इसकेसिवाय और और कईस्थानोंमें भी युद्ध हुवा जैसे रामनगर पिशावर हज़ारामें और अटकपरसरदार चतरसिंहसे सामनाहुवा और दूसरी जनवरी सन् १८४९ ईस्वीको मुलतान नगर अंग्रेज़ी सरकारके अधिकार में आया और हिंदूसिंह ओड़न्यू साहबका हंता अर्थात् क़ातिल और रामसिंह और मूलराजकी सेनाके बहुत सरदार हननहुवे और सर हिनरी लारनस साहब बहादुर जो पहले लाहौरके रज़ीडंटथे और रुखसत लेकरवलायत गयेथे वेनौ ९ जनवरीको बलायतसे लेटकर लाहौरमें पहुंचे और इसी महीनेकी तेरह तारीख १३ को अंग्रेज़ीसेनाने जेलमनदी केपास तिरस्कारपुर सरशेरसिंहका गाढ़पराजय किया और बाईस २२ जनवरीको मूलराज अपनेआप सरकारके शरणागत हुवा ॥ ❀

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सिक्खोंकी पिछली लड़ाई जो गुज़रात पर हुई उ-
समें शेरसिंह बहुत हारा और युद्धकी सामग्री सहि
त ४० चालीस तोप अंग्रेज़ी सेनाके हाथलगी और शेरसिं
हने भागकर गुज़रातमें आश्रय लिया वहांसे भी पीछा
करके उसे भगाया और श्रीयुत नवाब गवरनर जनरल
साहब बहादुरकी आज्ञानुसार लाहौरमें एक कौन्सल
जिसके अधिपति अर्थात अफ़सर करनैल लारन्स
साहब बहादुरथे नियतहोकर यह निश्चय हुवा कि
महाराजा दिलीपसिंह भरतखण्ड में रहें और उन
को चारलाख रुपैया बरसौंधी सरकार अंग्रेज़ी सेमि-
लाकरे और पहलेही पहल पंजाबमें चारकमिश्नर-
नियत हुवे एक पिशावर मे एक मुलतान में एक लाहौर
में एक जालंधर में ॥

सन् १८४९ ईस्वीमें सारा पंजाब देश अंग्रेज़ी राज्यके
अधिकार में हुवा और सभके शस्त्र लिये गये और प्र-
तिदिन ज़िलोंके प्रबंध और कमिश्नरों के नियत-
करने में यहांपर्यन्त उद्योग होते रहे कि सन् १८५९
ईस्वी में इस पंजाब देश में एक साहब लफ़टनंट ग
वरन बहादुर नियत हुवे इससे पहले यहांके मुख्या-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वामी की पदवी चीफ़ कमश्नर थी सन् १८५७ ईस्वी के अंतमें दिल्लीकी कमश्नरीभीजो पश्चिमदेशके अधिकारमें थी पंजाबके राज्यमें मिली और अबपंजाबमें १० दश कमिश्नरी और तेतीस ३३ ज़िले हें अब सारा राज्य पंजाबका सरकार अंग्रेज़ीके उपभोगमें हे और सारे पंजाबी राजा और नवाब मलिका मुअज़्ज़मा इंगलिस्तान के आधीनहें॥

गैरसरकारी राज्य का वर्णन अर्थात्

जहां राजाओं वा नवाबोंका राज्यहे दिल्लीकी कमिश्नरीमें नवाब पाटौधीवाला हे हिसारकी कमिश्नरी में दुजाणेवाला नवाब — और लुहारूवालाहे — अम्बालेकी कमश्नरी में — महाराजा पटयाला और राजा नाभेवाला और जींद का राजा औरनवाब मलेरकोटला सरदार कलसिया हें श्मिलेकी कमश्नरीमें राजा नाहरसरमोर — बघाहरका राजा और नालागढ़ का राजा और क्योनथलका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

राजा और खलौरका राजा यह सभ राजा पहाड़में स्वतंतत्र और बड़े प्रतिष्ठित अर्थात् बइख्तयार खुदक लानू रईसहैं और कपूरथलेका राजा मंडीकाराजा और सुकेतका राजा और चंबेकाराजा यहसभ जालंधर की कमिश्नरी में है और लाहौरकी कमश्नरी में फ़रीदकोटका राजाहै और पंजाबके उत्तर में महाराजा कश्मीर और जम्मून् का राज्यहै और दक्षिणमें नवाब बहावलपुर का अधिकारहै —— यहसभ राजा अपने राज्य में सरकार अंग्रेज़ी के अनुयायिहोकर पंजाब में राज्य करतेहैं ॥

पंजाबके विभाग और पैदावारका वर्णन

पंजाब के दो विभागहैं उनमें से उत्तर कोणके विभागमें पर्वतहैं और वहांकी पृथिवी बहुत विषम अर्थात् अत्यंत ऊंची नीची है इस विभाग में देवदारु के वृक्ष अधिक हैं किसी २ पर्वतसे लवण निक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लता है और कई जातिकी धानुकी कानें भी हैं। और इन खण्डों में जहां बस्ती अर्थात् आवादी है वहां गीहूं और जुवार अधिक उपजते हैं और यहां

दूसरा भाग नैऋत कोणकी ओर है वहांकी पृथिवी समहै और इसीको पंजाब बोलते हैं यहां गीहूं मी चावल और सभ प्रकार की दाल ईख वा पौंड़े और अच्छे २ मेवे उपजते हैं और व्यापारी यहांसे चीनी चावल नील गीहूं और कपड़ा आदि सिंधु नदी के पश्चिम ओर और काबुल देश में व्यापार के लिये लेजाते हैं और वहां से बेचनेके लिये घोड़े मेवे सीसा पिशोरी चावल जो प्रसिद्ध हैं लाते हैं और दुशाले और कई प्रकारका पश्मीना और केसर — बादाम — पिस्ता अंगूर बिही — अनार — नासपाती — बेदमुश्क — कश्मीर — से लाते हैं — पिशावर और सिंधु और मुलतान में हींग का वृक्ष होताहै सरकार अंग्रेज़ीके विचारसे कांगड़ा और देहरादून के पहाड़ोंमें चाय की खेतीहोतीहै और पंजाबमें सन रूसके समान होता है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बासियोंकावर्णन

इस देशमें सभ जाति हिंदू मुसलमान बसते हैं परंतु मुसलमान सभसे अधिकहैं खत्री उनसे कम और सिखथोड़े और जाट और राजपूत और कश्मीरी बहुत हैं सिंधुनदीकेपार जोपठान जाति रहतीहै वे सभ मुसलमान हैं ॥ *

उननदियोंकावर्णन

जोसमुल्क

पंजाब के राज्य में हैं

१ सतलुज नदी इसे शास्त्रमें शतद्रू कहतेहैं यह नदी भवानीनाम हिमके पर्वतसे निकलकर पर्वतका वलूरसे होतीहुई कहलूमें जातीहै वहां बिलासपुर केनीचे छानूपरके पहाड़से निकल कर इसकीदो शाखां होगईहैं और फिर कसबारोपड़के नीचे आ कर दोनों शाखां मिलगईहैं फिर कसबा छोटा माछीयान के नीचेहोकर लुधानेके नीचे आती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है इस स्थान में राज्यमार्ग है और बड़ासेतु अर्थात् पुल बंधाहुवा है और लाहौर के आवागमन का यहीबड़ा मार्ग है और वहांसे एक सड़क फ़िरोज़पुर को गई है वहांसे भी लाहौरकी सड़क जारी है ॥ *

२ व्यासा नदी है जिसे संस्कृत ग्रंथों में विपाशा लिखा है जिसे और पंजाबी इसे ब्याह कहते हैं यह नदीभी हिमके पर्वतके एक सरसे निकलती है जिसे व्यासकुण्ड कहते हैं पहले कुल्लूके नीचे होकर मंडीमें जातीहै फिरसुकेतके नीचे जहांलोहे की कान है बहकर नादोन नगरमें पहुंचती है और कसबा हरीकेपत्तन में जो फ़िरोज़पुर और अमृतसर के ज़िलेकी सीमपर है व्यास और सतलुज येदोनों नदीयां मिलगई हैं और वहां इसका नाम ग्वारा होजाता है फिर बहावलपुर की सीम में जाकर जहां जेलम और रावी और चिनाब मिली हुई बहती हैं यहदोनों भी पहलादपुर में मिलजाती है यहां जो यह पांचोनदीयां अर्थात् सतलुज ब्यास रावी चिनाब जेलम मिलकर बहतीहैं इसकारणसे इसस्थान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

को पंचनद कहते हैं॥

२ रावी पुरातन ग्रंथोंमें इसे ऐरावती लिखाहै और पर्वत भद्राल और मनमहेस के महादेव संबंधीसर से जो चंबा देश के आधीन हैं यहनदी निकलती है और बधली नदी और नई नदी और रावी ये तीनों मिलकर चंबे नगर के नीचे बहती हैं यह शहर पहाड़ में प्रसिद्ध है इस देश की सीम में चांदी की कानहै यह नदी सोहली और शाहपुर शहरसे होकर माधोपुर के ग्राम में आती है जो गुरुदासपुर के ज़िले में है इसी ग्राम के पाससे इसमें से एक नहर काटकर लाहौर में लाये हैं और यही नदी लाहौर के नीचे प्रचलित है इस लाहौर शहर की रक्षाके लिये औरंगज़ेब बादशाह के समय में बड़े पक्के २ दृढ़स्थान और पांच कोस तक बंध बनाये गयेथे वे तब इसने छाडाले अब यह नदी चौड़ाव मे बादशाही किलेसे शाहदरे तक बहती है और सरदारपुर और फ़ाज़लशाह ग्रामपर नदी चीनाव और जेलमसे मिलजाती है यहां यह तीनों नदियां इकट्ठी होकर बहती हैं यंहा इस नदी का नाम तिम्मून होगया है अर्थात तीनों नदियां एक होगई हैं फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मुलतान के प्रांतमें होती हुई बहावलपुर की सीमा में जहां सतलुज और व्यास मिलती हैं यह भी जा मिलती है इस स्थान में इसका नाम पंचनद होजाता है ॥ ❀

४ चीनाब नदीहै इसे संस्कृत में चंद्रभागा लिखते हैं इसका कुण्ड अर्थात् मम्बा बहुत दूर है यथार्थ में तो यों है कि चीन के पहाड़ से एक नदी जो निकलती है उसे चंद्र नदी कहते हैं और दूसरी नदी जो तिब्बत के पहाड़से निकलती है उसे भाग बोलते हैं यह दोनों नदीयां जो किश्तवार के प्रांत में मिलकर एक होगई हैं इसीलिये यहां इनका नाम चंद्रभागा होगया और इसी शब्दको बिगाड़कर चिनाब नाम रक्खागया फिर यह नदी त्रिकुटा पर्वतपर होकर जो जम्मून के आधीन है अकनूर नगरके नीचे जो जम्मूदेशकी सीममें है पहाड़से उतरकर कई शाखां होकर बहीहै और फिर कसबा बहलोलपुर में एक होय वजीराबाद में पहुंचतीहैं यहांबड़ा पुल है और राजमार्ग है फिर कसबा झंगसियालो से आगे आठकोस के अंतर परजेलम नदीसे मिलजाती है व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हां इसका नाम त्रिम्मून घाट प्रसिद्ध है॥ *

५ जेलम इसे हिन्दी में और कश्मीरी में वेहत बोलते हैं यह नदी चश्मा वेर नागसे निकली है और इसमें कसवा इसलामाबाद के पास मटन वामकुण्ड का पानी और कुण्डोंके पानी समेत आ मिलता है और वहां एक नदी होकर वहती है फिर श्रीनगर कश्मीर की राजधानी में वहकर जववारह मूल से होती हुई मुज़फ़राबाद. नामनगर में जो कश्मीर का एक नगर है पहुंचती है तब तिब्बत की सीमासे नैनसुख नाम एक नदी परम वेगसे इसमें आकर मिलती है और पगली की सीमापर कृष्णगंग नाम नदी भी इससे मिलजाती है वहां जो कसवा वांगली से नीचे वहकर खकरान देश की सीमा में आकर पहाड़ से नीचे गिरती है और कसवा जेलम के पास आकर जो वहती है इस कारण यहां इसका नाम जेलम नदी होगया फिर कसवा फंगसियालान से आठ कोस आगे वहकर त्रिम्मून घाटपर चंद्रभागासे मिलजाती है॥ *

६ अटक नदी है इसे अवासी नदी कहते हैं यह नदी पंजाबके पश्चिम में है और उनपांचों नदियों में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नहीं है जिनके कारण से पंजाब देशको पंजाब कहते हैं यहनदी बड़ीहै बहुत तीक्षण और वेगसे चलती है काबुल और हिन्दुस्तान के बीचमें केवल यही नदी सीमाकी अवधिपर और यह निश्चय है जो कोई मनुष्य इसनदी के पारचला जावे तोफिर वह हिंदू नहीरहता इसनदीका मुलककल्माक पहाड़ी देश है वहांसे निकलकर काशगर और तिब्बत में आकर काश्मीर औरपगली और दमतूर की सीम में होती हुई युसफज़ई जातिके देशमें आती है और वहांसे अटक के किलेके नीचे वहती है यहां इस नदीका नाम अटकके किलहीके कारण अटक नाम प्रसिद्ध होगया और नदी काबुल और थोड़ी नहरों समेत जो आतीहै वहभी इसीस्थान में इससे मिलती है इसका राजमार्ग अटकके कि लेके नीचे है इसस्थान में जो इसनदीका फाटकमहै इसलिये तीक्षण और वेग से वहतीहै और इस नदी में पश्चिमकी ओर श्याम पत्थर इतना बड़ाहै जो नौका उससे टक्कर खावे तो उसके टुकडे २ सूक्ष्म होजावें और इसपत्थर का नाम जलालिया प्रसिद्ध है और इसका कारण यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है एक समय अकबर बादशाह नौका में चढ़कर
पार उतरता था और एक और नाव रत्नों और नि
धि अर्थात् खज़ानों से भरीहुई जो उसके साथथी वह
इस पत्थर से टकराकर टूट गई अकबर बादशाह
यह देख हंसा और कहने लगा हमारे लियेयह प
त्थर ही जला लिया हुआ —— जलालिया एक अफ़
ग़ान का नामथा जो अकबर बादशाह के समय में
बटमारी कियाकरताथा और बादशाह का माललू
ट लिया करताथा उसी दिनसे आजदिनतक इसप
त्थर का नाम जलालिया प्रसिद्ध होगया फिर यह न
दी यहांसे पहाड़ीके बीच परगना खटक के पास
जो पिशावर की एक तहसीलहै होतीहुई नीलाब
और क़सबा मखड़ और चिली और ख़ुशहाल गढ़
और कालेबाग़ में पहुंचकर रेगिस्तान में जो डेरह
इस्माईल खान में पहुंचतीहै वहांसे चलकर कोट
मिठ्ठन में जो डेरह ग़ाज़ी खान की एक तहसील
है क़ाज़ीकी समाधि वा क़बर के नीचे पांचो नदि
यां अर्थात् सतलुज व्यास रावी चिनाब जेलम मि
लकर इस अटक नदीमें मिलजाती हैं फिर यहांसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छहो नदियां मिलकर आगेको चलीजाती हैं इसस्थान
मैं इस नदीके उसपार इरवतयारखां की गढ़ी नवा
व बहावलपुर के अधिकार मैं है और उसके साम
ने इसपार पंजाब मैं राजनपुर नामगांव है यहां
इस नदीका नाम सिंध होगया है और सिंध देश ^
इसी नदीके नामसे प्रसिद्ध हुवाहै भारतवर्षीय ^
लोग इसीस्थानमैं इसनदीसे पार उतरकर बिलोचि ^
स्तानको जातेहैं और वहांसे ईरान को और यहां ^
से खार समुद्र अर्थात दरियाशोरतक इसनदीके दो
नों तरफ़ रेत और बनचलागया है फिर यह नदी ^
भक्करके किलेमैं पहुंचकर दोशाखां होकर भक्कर
के किलेके दोनों ओर बहतीहै इसकारण यह क़िला
बड़ा दृढ़ है फिरखार समुदर मैं जामिलतीहै इससे
स्फुटहै इसपंजाब देशकी पांचोंनदियां और छठी ^
नदी अटक महासागर हिंदमैं जामिलती हैं ॥

दूआबोंकावर्णन

ऊपर वर्णनहोचुका है कि इसदेशमैं छह नदि
यांहैं और जोदेश दो२ नदियोंके मध्यमैं स्थित हैं ^

6389

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उह दुआबा अर्थात् जलद्वयांतर्गत देश कहते हैं इस रूपमें इनछह नदियांसे पांच जलद्वयांतर्गत देश अर्थात् दुआबे हुवे उनकी व्याख्या यह है—

१ जोदेश सिंधुनदी और जेलमके अंतर्गत हैं उसे दुआबा सिंधसागर कहतेहैं॥—— ❋

२ जेलम और चिनाबके अंतर्गत देशको दुआबा चिन्य बोलतेहैं इसमें चिन् चिनाबका और यविय का जो पुराना नाम जेलमका है लियागया है और कोई २ मनुष्य इसदुआबेको च चिनाबका और ज जेलमका लेकर चजभी कहते हैं॥ ❁

३ और चिनाब नदी और रावीनदीके मध्यमें जो देशहै उसे रचना इसकारण कहतेहैं र रावीका और चना चिनाबका॥ ❋

४ जो पृथिवी रावी और व्यासके बीचमें है उसे दुआबा बारी बोलतेहैं इसमें ब व्यासका और आरी रावीका मिलायागया है॥ ❁

५ जोदेश नदी व्यास और सतलुजके मध्यमें है उसे दुआबा बस्तजालंधर बोलतेहैं इसमें ब व्यास का और स्त सतलुज का है यह पांचों दुआबे बहु-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

त बसेहुवे सरसबज़ और इनकी आब और हवा समअर्थात मअ़ात दिलहै परंतु यह एक अन्द्रलीबातहै कि प्रत्येक दुआबे की भाषा और लिवास और चाल चलन और स्वरूपमें अंतर हैं और कुछ कुछ मतमें भी भेदपाया जाताहै ॥ ❦

इनदुआवोंमेंसे जो प्रत्येक दुआवेका वृत्त विस्तार पूर्वक लिखते तो ग्रंथ बढ़जाता है और जो समस्त नलिखें तो भूगोल रीतिके प्रति कूल है इस कारण इनदुआवोंके बड़े बड़े शहर और कसवों सहित प्रत्येक दुआवेका संक्षिप्त वर्णन करताहूं और हमारे समय में जो कमिश्नरी और जिलों और परगनोंका सरकारी विभाग है वह वर्णन होगा ॥ ✢

दूआवासिंधसागर

इस दूआवेका लंबाव जेलम नगरसे उस सीमातक जहां दोनों नदियां मिली हैं दोसौ वहत्तर २७२ कोस है और चौड़ाव भिन्न २ है उसमें सबसे अधिक जेलम नगर से अटक तक नब्बे कोस है और पिंड़ दादनखानका चकहमीद से जो जेलमपर है कालाबाग तक साठ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कोस और खानगढ़ से डेरह गाज़ीखान तक तीस कोस ३० और खानपुर से बारह कोस है॥ ❊

इस दूआबे की पृथिवी कुछ पर्वती है और थोड़ी पृथिवी में बन और वृक्ष हैं और थोड़ी में थल जिसे रेगिस्तान कहते हैं इस थल में बसापत अर्थात् आबादी कम है और जल दुर्लभ और मुसलमान विशेष और हिंदू न्यून हैं और बड़े नगर भी कमपर ग्राम और कसबे अधिक हैं और कुछ दृढ़ दुर्ग अर्थात् जंगी किले भी इस दुआबे में हैं विशेष करके दो किले तो ऐसे हैं जिनके समान सारे पंजाब में नहीं है एक अटक का क़िला जिसका नाम अटक बनारस भी है यह क़िला सन् ९८४ में अकबर बादशाह ने बनवाया था — दूसरा रुहतास का किला जिसे शेरशाह ने हुमायूं बादशाह के समय में बनायाथा यहदोनों क़िले नामी हैं और इनके सिवा और भी कितनेक छोटे २ किले हैं उन सभ में क़िला मनगेरह प्रसिद्ध है नवाब सरबलंदखां का बनाया हुवा — इस दुआबे में बड़े २ प्रसिद्ध कसबे ये हैं — एबटाबाद, कोहमरी, हजारा, हज़रू, हसनअब्दाल, रावलपिंडी, फतहजंग, फ़ड़तिकवू, बि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शनदीर, पिंडीघेप, रुहतास, जलालपुर, पिंड दादनखान्, इस के समीप नोनकी कान है इसका क्रय यहां बिशेष होता है जेलम नगर चकवाल, किला तलागंग, चकरवाला, नोशहरा, मरदवाल, सकवार, किला कदा, खुशाब, मद्दा, सरजल उद्दे, पफ़खरबाल, कसबा पकड़ला, मंडी, डेरह दीनपनाह, कोट उद्दे, कसवा बछराला, यह देश धुनबार कहलाता है यहांके घोड़े और खच्चर अच्छे होते हैं और रङ्ग चूर इस नगर के बाहर हीर और रांझे की कबर है इनमें हीर झंगसियाले की थी और रांझा हजारेका — मुज़फ़रगढ़, शाहगढ़, खानगढ़ सीतपुर, दावा ॥ *

दुआवा चिन्यवा चज

यह दुआवा चंद्रभागा नदी और बिथ नदी अर्थात् जेलम के मध्य वर्ती है इसका लंबाव कोहिस्तान अखनोर और मीरपुर से प्रारंभ होता है अलीपुर तक अनुमानतः एकसौ पचास कोस है और चौड़ाव एथक् एथक् अखनोर से मीरपुर समीपुरतक चालीस कोस और कादराबाद से पचीस कोस और अलीपुर से चार कोस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस दुआबेके ज़मींदार प्रायः मुसलमान हैं और एथि वी बहुत है नहर और नाले कम हैं इसके प्रसिद्ध नगर यह हैं— कुञ्जाह गनीमत कुञ्जाही नाम कवी इसी स्थानका था जिसकी मसनवी गनीमत फ़ारसी॰ में प्रसिद्ध है— गुजरात अकबर बादशाह का बसा या हुवा है— इस्लामगढ़का क़िला बहुत पुराना॰ और बहुतसा टूट फूट गया है इस किलेको चौधरी रहमत खान् भेडेंचने अहमदशाह दुरानीके समयमें बसाया॰ था— तख़्तहज़ारा शाहपुर मीरपुर यहांकी मूली प्रसिद्ध है वह एक गज़के लग भग लंबी और बहुत मोटी होती है और यहांपानी बहुत नीचे निकलता है॰ और खेती मेघके जलसे होती है और वहांके मनुष्य क्रोधी दुराचारी हननशाली बटमार हैं और देवह॰ और बटालेके वासी तो विशेष यहांके हिंदू प्रायः चोर हैं बिजवात इसमें ईख और शाली धान बहुत पैदा होते हैं धौल— अरबनूर ॥

३ दुआबा रचना

यह दुआबा रावी और चिनाब के बीचमें है इसका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लंबाव जम्मून की सीमा और वसंतपुर से जो रावीके तट पर है बसदी फ़ाज़लशाह ग्राम तक २८० दोसौ अस्सी कोस के लगभग है और चौड़ाव भिन्न भिन्न बसंतपुर से जम्मूतक तीस कोस और शाहदरेसे बजीराबाद तक चालीसकोस है यह दुआबा बसदी फ़ाज़लशाह पर पूर्ण होता है जो मुलतानसे संबंध रखता है इस में प्रसिद्ध नगर ये हैं जलालपुर कम्हाना शेरकोट रामचौंतरा हिंदुवोंका प्रसिद्ध स्थ्यालय — मघयाना यहांका पौंड़ा प्रसिद्ध है — कोटकमालिया — खाईमीर शाहज़ादा — पिंडीशेषमूसा — झामरा — सियाल — सय्यदवाल — फ़रीदाबाद — झंगसियाल — खोच्छा — दरह — चिनयोट — पिंडीभट्टियान — जलालपुर भट्टियान — रसूलनगर जिसका उपनाम रामनगर अलीपुर उपनाम अकालगढ़ — शेखपुर — मद्दर — वजीराबाद — गूजरानवाला — एमनाबाद पसहूर — डसका — सियालकोट — जफ़रवाल — शाहदरा — सोधरा — सम्बड़याल — संखडा — कंजरूड़ — नौनार — जसहर — नारोवाल — काज़ियोंकाचक — जम्मू पसरूर — जसरोटा — कठूहा ॥ ❋

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

४ दुआबाबारी

यह दुआबा व्यास और रावी के अंतरगत है और सभ से बड़ा नौका स्वरूप दोनों ओर से कम चौड़ा और बीच में से अधिक चौड़ा है और उसकी पृथिवी भी ऊंची है उस दुआबे में एक पुरातन कल्या है वह कलानौर के समीप बहती है इसे किरन कहते हैं और कितनी एक नहरें सरकारी राज्य में बनी हैं और दो नहरें और हैं उनमें एक नबाब अलीमरदान खान की बनाई हुई है जो लाहौर को जाती है इसे शाह नहर कहते हैं और दूसरी नहर बटाले नगर के नीचे पट्टी नगर को जाती है कसूर के परगने के पास रावी नदी में जा गिरती है यह दोनो नहरें कभी बहती हैं और कभी सूक जाती हैं और शाह नहर शाहपुर से पांच कोस आगे बढ़कर माधोपुर के पास निकली है इस दुआबे के मनुष्य ओधी दुरासारी हैं दोनों नदियों के निचाबसे पांचों नदियों के मिलने तक इस दुआबे का लंबाव तीन सौ कोस का है और चौड़ाव भिन्न भिन्न पर लाहौर से चालीस कोस है इस दुआबे में खेती चाही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और बारानी होती है और इस में प्रसिद्ध नगर ये हैं गुगेरा मुलतान — शुजाआबाद नवाब शुजाखांन् — मुलतान के सूबेदार का बनाया हुवा तलंबा — शकपट्टन — हुजरा — कसूर — खेमकरन — पट्टी नौशहरा — अमृतसर — लाहौर — डेरह नानक — बटाला — अदीनानगर बसाया हुवा अदीना बेगखान का — पठानकोट — नूरपुर — कांगड़ा — सुजानपुर — जलालाबाद — वैरोवाल ॥ *

दुआबा बस्तजालंधर

पंजाब देशका यह पांचवा दुआबा है और लंबाव चौड़ाव में सभ दुआवों से बहुत छोटा पर बसापत और खेतीकी अधिकाई में सारे पंजाब देशसे उत्तमता रखता है इस दुआवे में कहीं उजाड़ नहीं है और जल और नहरों वृक्षाधिक्य में अर्थात् आम आदि मेवों के पैदा होने में काशमीर सम है और अन्न इतना अधिक इस दुआबे में उपजता है किसम स्त पंजाब में अन्न यहांसे जाता है और दुर्भिक्ष में यहांके बासी अन्नकी न्यूनताके भयसे निर्भय रहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हैं बरन बहुत रुपैया कमालेते हैं और ईख गन्ना और रूई अत्यंत बोते हैं और यहांका गुड़ और बूरा और शक्कर अत्युत्तम होताहै और व्यापारी काबुल कश्मीर आदी तक लेजाते हैं इस दुआबे में सब छोटी बड़ी नहरें छत्तीस ३६ हैं उनमें से २४ चौबीस तो सदैव बहती रहती हैं और इन चौबीसों में से दो नहर बड़ी हैं एक वह जो व्यास नदी के समीप हैं उसें स्याह वेंई अर्थात् कृष्ण वेंई कहते हैं यह वह नहर है जो व्यासासे कोई जालंधर को जावे वा जालंधर से लाहौर को आवे तो मार्ग के बीच पड़ती है और राजा आलूवालिया के राज्य में होने के कारण पार उतरने वालों से वहां के राजा के मनुष्य उतराई का महसूल लिया जाता है॥

दूसरी नहर वह है जो जालंधर से फलौर को जाते हुवे जालधंर की छावनी के पास शहर से पांचकोस के अंतर पर श्वेत वेंई अर्थात् सफेद वेंई नाम मार्ग में पड़ती है यह दोनों नहरें गहरी हैं और बराबर बहती रहती हैं और बारह नहरें ऐसी हैं कि सारे वर्ष सूकी रहती हैं और केवल चौमासे में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बहुत चढ़ाव से बहती हैं चौमासा होचुकते ही
फिर सारे वर्ष सूककर थलीहोकर पट पड़पड़ी
रहती हैं इस दुआबे का लंबाव पर्बतोंके प्रारंभ
से सुलतानपुर तक आठ कोस है और चौड़ाव
पचास कोसके लगभग और व्यासा पारजो वैरोवा–
–ल है उससे सतलुजके राज्यमार्ग फल्लौरतक तेईस
२३ कोसका है इस दुआबे में गावोंकी वस्तापत
बहुत है और बडे बड़े नगरभी अधिक हैं और
प्रसिद्ध नगर येहैं—कुसूर—सुलतानपुर—तलवंड़ी
रायसुलतान—पुराना शहर शेखूपुरथा यह उजड़कर कसूर–
पला बसाहै—जालंधर—टांडा—हरयाना—दिसूहा
मुकेरियानू—हाजीपुर—होशयारपुर—करतारपुर—
बजवाड़ा—मालपुर—गढ़शंकर—राहूनू—फलौर—
तलवन—नूरजहा वेगम काबसायाहुआ कसबानूरमहल
—नकोदर—फगवाड़ा—बड़े२ कसबे और प्रसिद्ध नगर
इस दुआबे में दोसौ के लगभग हैं और कसबा हाज़ीपुर
से सातकोस के अंतरपर जो एक प्रसिद्ध तलवाड़ा नाम गांव है
उसके ऊपर पर्बत तलमैं गुलबहार नाम एक गांव है
वहां से व्यासानदी पर्बतके टीलोंसे उतरकर पृथिवी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में सम वा सीधी वहती है और वहीं से एक बड़ा नाला परम वेगसे नदीके समान चौड़ा निकला है और फिर नौशहर में पहुंच नदीमें मिलगया है यह सारे देश में इस लिये प्रसिद्ध है कि नदीके दोनों ओर की पृथिवी गाढ़ हुई है और यहां नदी अपने दोनो ओर के कूल वा किनारे से बाहर होकर कभी नहीं वही और यह भी कहते हैं नादरशाह बादशाह जो भरतखण्ड पर चढ़कर आयाथा तो वह इसी मार्ग से पुल बांध उतराथा इस दुआवे के पर्वतों में कई राजा जुदा जुदा राज्य करते हैं और कई किले भी हैं परंतु विस्तृत सारी बातों के बहुत लिखने से ग्रंथका विस्तार होता इस लिये अपने समय के देश विभाग की ओर विचार करता हूं॥ ॥

सरकार इंग्लिशया की अमलदारी के पंजाबविभाग वर्णनमें

हमारे समय में अर्थात् सन् १८६१ ईस्वी में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पंजाब देश अपने संबंधित ज़िलों समेत दस कमिश्नरियों में विभक्त है और प्रत्येक कमिश्नरी में कई कई ज़िले हैं और प्रत्येक ज़िलेमें कई तहसीलें हैं और तहसीलोंका मध्य भाग अर्थात औसत प्रति ज़िला चार हैं प्रत्येक कमिश्नरी में एक साहब कमिश्नर स्थित है और प्रत्येक ज़िलेमें एक एक डिप्टी कमिश्नर कमिश्नरसाहब का अनुयायि होकर आज्ञा प्रदान करता है और प्रति तहसील एक एक तहसीलदार नियत है —

इस नक़्शे से पंजाब की राजधानी की सारी कमिश्नरी और ज़िले और तहसीलें विद्यार्थियों को मालूम होजायगी

नंबर	नाम कमिश्नरी	नंबर	नाम ज़िला	नाम उन तहसीलों का जो उस ज़िलेमें है
१	दिल्ली	१	दिल्ली	महरोली, अलीपुर, बल्लभगढ़
		२	करनाल	पानीपत, कड़सोली, बरोंडा
		३	गुड़गांवा	फ़ाउसा, रिवाड़ी, फ़िरोज़पुर झिरका, पलबल, नूंह,
२	हिसार	४	हिसार	हिसार, हांसी, भोवाम, फतहआबाद बरवाला
		५	रुहतक	रुहतक, सांपला, गुहाना, झज्जर,
		६	सरसा	सरसा, फ़ाज़लका, सहूवाला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

नंबर	नाम कमिश्नरी	नंबर	नाम ज़िला	नाम उन तहसीलों का जो उस ज़िले में हैं।
३	अम्बाला	७	अम्बाला	अम्बाला, खरड़, जगाधरी, नारायणगढ़, रोपड़
		८	लुध्याना	जगरावां, समरयाला, नैगावाल, लुध्याना
		९	थानेसर	पीपली, कैथल, लाडवा, गोयला,
		१०	शिमला	शिमला, कोटखाई, भरौली, सघार,
४	जालंधर	११	जालंधर	जालंधर, फ़िल्लौर, निकोदर, नवाशहर,
		१२	होशियारपुर	होशियारपुर, गढ़शंकर, ऊना, दसूहा
		१३	कांगड़ा	कांगड़ा, नूरपुर, हरीपुर, नादौन, कुल्लू
५	अमृतसर	१४	अमृतसर	अमृतसर, तरनतारन, अजनाला,
		१५	गुरदासपुर	गुरदासपुर, बटाला, पठानकोट, शकरगढ़
		१६	सियालकोट	सियालकोट, डसका, पसरूर, ज़फ़रवाल
६	लाहौर	१७	लाहौर	लाहौर, शरकपुर, चूनियां, कुसूर
		१८	फ़िरोज़पुर	फ़िरोज़पुर, मोगा, ज़ीरा, मुक्तसर
		१९	गूजरानवाला	गूजरानवाला, वज़ीराबाद, हाफ़िज़ाबाद

Digitized by eGangotri

नम्बर	नाम कमिश्नरी	नम्बर	नाम ज़िला	नाम उन तहसीलोंका जो उस ज़िलेमें है
७	मुलतान	२०	मुलतान	मुलतान, सराय सिद्धु, सुजाआबाद, लोधरान, मैलसी,
		२१	गुगेरा	गुगेरा, मन्टगुमरी, दपालपुर, पाकपटन, हड़पा
		२२	झंग	झंग, चिनयोट, शोरकोट
		२३	मुज़फ़रगढ़	मुज़फ़रगढ़, रंगपुर, सैतपुर, कोटअद्दू
८	डेरह इस्मा ईलखान	२४	डेरह इस्मा ईलखान्	डेरह इस्माईलखान, दरयाखान, कलाची, लय्या. टांक,
		२५	डेरह गाज़ी खान्	डेरह गाज़ीखान्, संघड, कोट मिठुन्, राजनपुर
		२६	बन्नू	बन्नू, ईसाखेल, लकीमरवत, मीयां वाली
९	कमिश्नरी जेलम	२७	जेलम	जेलम, पिंड दादनखान, कहूवाल, तलागंग
		२८	रावलपिंडी	रावलपिंडी, हजरो, पिंडीघेप, फतहजंग, गूजरखान्, कोहमरी, क्योटा,
		२९	गुजरात	गुजरात, खारियान्, फालिया,
		३०	शाहपुर	साहीवाल, खुशाब, भेरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नंबर	नाम कमिश्नरी	नंबर	नाम जिला	नाम उन तहसीलोंका जो उस जिलेमें हैं
१०	कमिश्नरी पिशावर	३१	पिशावर	पिशावर, ख्वालसाखटक, दुआबा, दाऊदजई, यूसफ़जई, हश्तनगर ६
		३२	कोहाट	कोहाट, हंगू
		३३	हजारा	हजारा, मानशहरा

इस नकशे से प्रत्यक्ष है पंजाब की राजधानी के अनुसार पांच कमिश्नरी और तेंतीस ज़िले हैं अब उनका संक्षिप्त वृत्तांत वर्णन होताहै॥ ❋

प्रथमकमिश्नरीदिल्ली

इस कमिश्नरी में तीन ज़िले हैं — दिल्ली, गुरुग्राम, करनाल❋

प्रेरणा

लाहोरसे इन जिलों का जो अंतर मीलों के हिसाब से लिखा गयाहै वह सीधी मापसे है और उस में और सड़क के मार्ग में कुछ भेद पड़ताहै जो किसी को यह अंतर मालूम होताहै उस का यही कारण जानो॥ —

दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लाहौर से दिल्ली ढाई सौ मील दूर अग्निकोण में यमुना जीके दाहने किनारेपर बसती है यह नगर बड़ा पुराना है पहले इसका नाम इंद्र प्रस्थथा जब कौरवों और पाण्डवों में युद्ध होकर देशके दो विभाग जो हुवे तो दिल्ली पाण्डवों के विभाग में और हस्तनापुर कौरवों के विभाग में आयाथा फिर परस्पर के विवाद के कारण यह नगर उजड़ गया उसके पीछे राजा दिल्लू ने उसके पास एक और नगर बसाय अपने नाम पर उसका नाम दिल्ली रक्खा और यह राजा दिल्लू राजा विक्रमाजीत से तीनसौ ३०० वर्ष पहलेथा उसके पीछे यह नगर फिर उजड़ा और उस दिन से आजतक बड़े २ खंडर पड़े हुवे हैं उसको पुरानी दिल्ली कहते हैं फिर शाहजहां बादशाहने सन् १६ ३१ ईस्वी में उसीके पास एक और शहर बसाया और उसका नाम शाहजहानाबाद रक्खा अब हमारे समय सन १८५७ ईस्वी में सर्वियों की अंग्रेजी सना सरकार कंपनी से विमुख होकर फिर इसनगर में इकट्ठी हुई और बहादुरशाह को जो शाहजहां की सन्तान में नाममात्र को बादशाही का स्थानापन्न चलाआता था अपना बादशाह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बनाया अंग्रेजोंने इन विमत्त उपाधियों का मूल छेदन करके इसनगर को विजय किया और बादशाह को ब्रह्मा देश के रंगून नगर में भेज दिया इस उत्पात के कारण यद्यपि फिर उजाड़ होगया था पर अबवसतारला है और लोग ऐसा कहते हैं कि प्रतिशत पीछे दिल्ली उजड़ती आई है इसका प्रकार बहुत दृढ़ और छः हजार ६३६४ तीनसौ चौंसठ गज़ इसकी दीवार लंबी और चारगज़ चौड़ी और ९ नौगज़ ऊंची है इसमें बारह दरवाज़े चारखिड़की चौंसठ बुर्ज हैं और इसमें पांच बाज़ार बड़े नामी हैं उर्दू बाज़ार फैज़बाज़ार खासबाजार चांदनी चौक, जौहरी बाज़ार, परंतु सन् १८५७ ईस्वी में उर्दू बाज़ार, और फैज़बाज़ार सब टूट फूट गये अब एक स्थल अर्थात् मैदान हैं चांदनी चौक में नहर प्रचलित है सन् १८१७ ईस्वीमें इस नगर के रहने वाले एक लाख सैंतीस हज़ार छः सौ सत्तर १३७६७० के लगभग थे इस नगर के वासी परम स्वच्छ विनीत विचारवान प्रत्यस्पारची हैं परंतु विषयी और उदार हैं और इस नगर में प्रसिद्ध स्थान देखने के योग्य दो प्रकार के हैं अर्थात् बसे हुवे और उजड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बंधहुवे प्रसिद्ध स्थान पंदरह हैं॥ +

लालकिला, लालडिग्गी, सुनहरी मसजद, जामआ मसजद, मदरसा गाज़ीउलदीन का शमरूकी बेगमका बाग, बेगमका बाग, हुमायून् बादशाह का मकबरा, शेखनिज़ामुदीन औलिआ की दरगाह, रोशन चराग़ दिल्ली, क़ुतबसाहब की लाट, लोहे की लाट, ख़्वाजा क़ुतबदीन बख़्तयार की मज़ार, मनसूरका मकबरा, जिसका उपनाम मदरसा है, नबीकरीम वा क़दम रसूल, औरउजड़े हुवे प्रसिद्ध स्थान छः हैं— सलेमगढ़ — फीरोज़शाह का कोटला— तुगलकाबादका किला — रायपिथोरा का क़िला— जंतर मंतर पुराना किला ❀

सन् १८६१ ईस्वी में यह ज़िला दिल्ली तीन ज़िलों पर बिभक्त हुवा एक तहसील महरोली की है इसे तहसील जनूब भी कहते हैं इस तहसील में एक क़सबा नजबगढ़ दिल्ली से १२ कोस पश्चिम की तरफ़ है इसे नवाब नजफ़ख़ान् ने बसाया था और एक दुर्गकी नीवभी इस नवाबने कसबे के बाहर उखवाई थी पर अधूरा रहा इस कसबेके नीचे बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बड़ी २ झील है वह प्राय: जलसे भरी रहती है अब सरकारने उसमें से एक छोटीसी नहर निकाली है ——— इस क़सबे का प्राकार पक्का है पर बहुत जगैसे अवटूट फूट गया है —— दूसरी तहसील अल्लीपुर की है जिसे तहसील शिमाल कहते हैं ——— तीसरी तहसील बल्लमगढ़ की है यह क़सबा राव बलराम का बसाया हुवा है उसने महम्मद शाह बादशाह के समय में अपना राज्य स्थान इसे नियत कियाथा और बलराम का संक्षिप्त होकर बल्लमगढ़ कहागया है क्योंकि गढ़ क़िले को कहते हैं और शहर फसील वालेको ——— जो मनुष्य इसे बल्लवगढ़ लिखते हैं वह अशुद्ध है इस तहसील में क़सबा फरीदाबाद दिल्लीसे बारह कोसके अंतर पर दक्षिण की तरफ है इसे शेखफरीद बुखारी उपनाम मुरतज़ाखान ने जो जहांगीर बादशाह की सेनाका बख़शीथा सन् १५८७ ईस्वी में बसायाथा लोग इसके नामसे इसे फरीदाबाद कहते हैं पहले एक तहसील और थी ग़ाज़ुदीन नगर की कहलाती थी ग़ाज़ुदीन नगर एक क़सबा है १

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बसे हुवे प्रसिद्ध स्थान पंदरह हैं ॥ ॥

लालकिला, लालडिग्गी, सुनहरी मसजद, जामअ मसजद, मदरसा गाज़ीउलदीन का मामरूकी बेगमका बाग, बेगमका बाग, हुमायून् बादशाह का मकबरा, शेख निज़ामुद्दीन औलिआ की दरगाह, रोशन चराग़ दिल्ली, क़ुतब साहब की लाट, लोहे की लाट, ख़्वाजा क़ुतबदीन बख्तयार की मज़ार, मनसूर का मकबरा, जिसका उपनाम मदरसा है, नबीकरीम वा क़दम रसूल, और उजड़े हुवे प्रसिद्ध स्थान छः हैं — सलेमगढ़ — फीरोज़ शाह का कोटला — तुगलकाबाद का किला — रायपिथोरा का क़िला — जंतर मंतर पुराना किला ॥

सन् १८६१ ईस्वी में यह ज़िला दिल्ली तीन ज़िलों पर विभक्त हुवा एक तहसील महरोली की है इसे तहसील जनूब भी कहते हैं इस तहसील में एक क़सबा नजबगढ़ दिल्ली से १२ कोस पश्चिम की तरफ़ है इसे नवाब नजफ़ख़ान् ने बसाया था और एक दुर्ग की नीव भी इस नवाब ने कसबे के बाहर डलवाई थी पर अधूरा रहा इस क़सबे के नीचे बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बड़ी १ झील है वह प्रायः जलसे भरी रहती है अब
सरकारने उसमें से एक छोटी सी नहर निकाली
है——— इसक़सबे का प्राकार पक्का है पर बहु
त जगैसे अबटूट फूट गया है—— दूसरी तहसी
ल अल्लीपुर की है जिसे तहसील पिलमाल कह
ते हैं——— तीसरी तहसील बल्लमगढ़ की है
यह क़सबा राव बलराम का बसाया हुवा है उसने
महम्मद शाह बादशाह के समय में अपना राज्य
स्थान इसे नियत कियाथा और बलराम का संक्षि
प्त होकर बल्लमगढ़ कहागया है क्योंकि गढ़ क़ि
ले को कहते हैं और शहर फसील वालेको——
जो मनुष्य इसे बल्लबगढ़ लिखते हैं वह अशुद्ध है
इस तहसील में क़सबा फरीदाबाद दिल्लीसे बारह
कोसके अंतर पर दक्षिण की तरफ है इसे शेखफरीद
बुखारी उपनाम मुरतज़ाखान ने जो जहांगीर बादशा
हकी सेनाका बखशीथा सन् १५८७ ईस्वी में ब
सायाथा लोग इसके नामसे इसे फरीदाबाद कह
ते हैं पहले एक तहसील शहर की ग़ाजुदीन नगर
की कहलाती थी ग़ाज़ुदीन नगर एक क़सबा है १

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसकी आबादी पुख्ता है और उसके पासही हर-
नह प्रचलित है अंग्रेजोंने उसके ऊपर लोहे का पुल
बड़ी बुद्धिमत्ता से बनाया है सन् १८५७ ईस्वी में-
यह तहसील टूटकर इसके गांव ज़िला बुलंदशहर
और ज़िले मेरठ में मिल गये हैं॥

ज़िला करनाल

करनाल नगर लाहौर से दोसौ इक्कीस मील दूर है
पहले यह ज़िला पानीपतके नामसे प्रसिद्ध था और
ज़िलेकी कचहरीभी पानीपत में हुवा करतीथी—
सन् १८५६ ईस्वीसे करनाल इस ज़िलेका मुका
मसदर नियत होगया है करनाल की आबादी पानी
पतसे छोटी है पर इस जगह छावनी है इस शह
र में वीसहज़ार मनुष्योंकी आबादी है यह-
जमना की नहरके किनारेपर बसा है और यहां-
एक मज़ार हज़रत बोअली क़लंदर का है इस ज़िले
में तीन तहसील हैं एक तहसील पानीपत यह
नगर लाहौर से अग्निकोण में सवादोसौ मील के-
अंतर पर बसता है यह शहर बहुत पुराना है-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पहले समय में बडे बडे फारसी और अरबी के विद्या वान यहांथे और वे बडे२ कुतबखाने अपनी रचनाके छोड़ गये हैं उनके पीछे कोई ऐसा बुद्धि मान उनका स्थानापन्न नहुवा और नकिसीने विद्या का अभ्यास किया अबतो बिलकुल सफाई होगई यहां प्राय: मिलकी लोग रहते हैं प्राय: जिवीकासे निश्चिंत हैं खेती करवानी प्यारी जानते हैं इसलिये कसब और हुनर की तरफकम मन लगाते हैं इस शहर पानीपत में काचका कारखाना और शीशी बोतल आदिके बनानेका है और यहांके कांसी पीतल के वासन प्रसिद्ध हैं दूसरी तहसील लड़सौली की है और तीसरी तहसील घरौंडा की है नहरके पानीके कारण चावल बहुत पैदाहोता है॥ ❁

गुड़गावां

गुड़गावां दिल्लीसे नैऋत्य कोण में महरोली के मार्ग से २२ मीलके अंतर पर है और लाहोर के २६० मील अग्निकोण में है और इसनामका को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कारण यह है राजा युधिष्ठिर ने अपने गुरू द्रोणाचार्य जिनको यह ग्राम दान कर दिया था इसी कारण इसका नाम गुरूग्राम अर्थात् गुरूका ग्रामथा अब वह विगड़ते विगड़ते लोक में गुड़गांवा प्रसिद्ध होगया है इस स्थान में एक शीतलाका बड़ा मंदिर है चैतके महीने में उसकी पूजा हिंदू लोग करते हैं चार मेले बड़े भारी होते हैं हजारों रुपयों का चढ़ावा चढ़ता है सत्ताईस सो आदमीकी इसमें आबादी है और इसी मार्ग से मुमालिक मग़रबी को व्यापारके पदार्थ जातेहैं इस ज़िलेमें पांच तहसीलें हैं, झाड़सा, नूह, पलवल, फिरोज़पुर, फिरका रीवाड़ी——— तहसील झाड़से में फर्रुखनगर एक बड़ा कसबा और एक सुहना है——— पहले फर्रुखनगर नवाब की आज्ञा में था पर मुफसिदा सन् १८५७ ईसवी में जो नवाब यहांका नवाब विमुख होगयाथा वह फांसी दिया गया और तफज्जुल हुसैनखान खैरख्वाह सरकार को यह मिल गया——— इसकसबे में क्षार लवण भी पैदा होता है और कसबे सुहने में उष्ण जल का एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ऊएड़ है और यह पहाड़ के नीचे वसता है यहांके वासियों का पीतरंग होता है——

तहसील नूह में बड़े कसबे, तावडू, नूह, हथीन हैं कसबा तावडू पहाड़ पर है वहांकी आब हवा बहुत अच्छी है पर नूह की आब हवा इस कारण बहुत खराब है कि चौमासे में इसके चारों तरफ़ पानी घिरा रहता है यहांभी खारी नोन बहुत पैदा होता है॥

तहसील पलवल में दो बड़े कसबे हैं पलवल और होड़ल कसबा रेवाड़ी गुड़गांवें के ज़िले के और क़सबों से बहुत बड़ा है उसमें धनाढ्य मनुष्य रहते हैं और अन्नका व्यापार होता है और पीतल के पात्र बहुत बनते हैं यह तहसील अलवर और जयपुर आदि के इलाकेसे मिलती है और बरसाती एक नालासा हवी नदी नाम प्रसिद्ध है चौमासे में वह दूरतक फैलजाता है और यह पानी जैपुर के प्रांतसे आता है और इस ज़िलेसे होकर झजर को चलाजाता है और अन्नों की अपेक्षा से बाजरा और जौ इस ज़िले में अत्यंत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पैदा होते है॥ ✣

कमिश्नरी हिसार

इस कमिश्नरी में तीन ज़िले हैं ज़िला हिसार ज़िला रोहतक ज़िला सरसा॥ ❋

हिसार

लाहौर से दोसौ मील दक्षिण में अग्निकोण को फुकता हुवा यह नगर बसता है पहले समय में बहुत बसता था अब इसमें दस हजार आदमी भी नहीं बसते देश हरियानेका यह बड़ा नगर था अब इसमें सरकार अंग्रेज़ी की गोशाला है यहांकी गौ और भैंस अच्छी होती हैं दूध बहुत देती हैं एक साहबने एक बैलको सवा चार हाथ ऊंचा मापा था वह बैल दसमन पानीकी पखाल उगता था यहां जाट और रांघड़ अधिक बसते हैं फ़िरोज़ तुगलक के महलों के खंडर यहां हैं और एक पत्थर की लाट भी गड़ी हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है किले हिसार के बाहर शाह बहलोल का पुरा-
ना मजार है और हज़रत शाह जनीद की भी
खानकाह यहां है और इस क़सबे में हिमायून
बादशाह के समय की एक जामामसज़िद बनी
हुई है इस जिले में पांच तहसीलें हैं पहली
तहसील खास हिसार की, दूसरी हांसी, तीसरी
भिवानी, चौथी फहतहाबाद, पांचवीं बर-
वाला ॥ ॐ

हांसी

दूसरी तहसील हांसी में है यह क़सवा पुराना है
इस में माणकराय राजपूत का बनाया हुवा
एक क़िला है जिसकी संतान कोटे बूंदी में राज्य
करती है और यह नगरभी किसी राजाका बसाया
हुआ है पहले समय में अच्छे अच्छे मकान थे
अब टूट फूट कर खंडर होगये शहर के अंदर
एक मज़ार नियामतुल्ला वलीका और पश्चिम ओर
एक खानकाह हज़रत जमालुद्दीन चारकुतब
की है यह सन् ६०० हिजरी में बनकर तय्यार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हुईथी ॥ *

तोशाम

यह कसवा तुरंशामखान् अफ़ग़ान का बसाया हुवा है उसने अपने नाम पर इसका नाम तुरशामरखाथा अब विगड़ते विगड़ते तोशाम होगया इसके पश्चिमकी तरफ़ एक पहाड़ी है उसपर एक गढ़ी रावपिथौरा की बनाई हुई है और मई सन् १८८१ ईस्वी से यहां से तहसील बदल गई अब भिवानी में होगई ॥ *

भिवानी

यह भिवानी हरयाने के ज़िले में मंडीका स्थान है यहां लाखों रुपैये का क्रय विक्रय होता है बहुत बड़े बड़े साहूकार यहां रहते हैं ॥ *

फतहाबाद

इस शहर को फ़ीरोज़शाह वादशाह ने अपने बेटे फ़तहखान् के नाम से बसायाथा इस लिये इसका नाम फ़तहाबाद होगया और एक पत्थर की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पत्थर की लाट फ़िरोज़ शाह की बनाई हुई इस में अबतक विद्यमान है ॥

टुहाना

यह कसबा इस ज़िले में पुराना है इसमें पठान और खतरी बसते हैं इस में चौपड़ का बाज़ार अच्छा बना हुवा है और जो इस क़सबे के बीच में खड़े होकर देखें तो शहर के चारों दरवाज़े दिखते हैं ॥ +

बरवाला

पांचवीं तहसील बरवाले में है यह कसबा राजा बलने बसाया था इस कारण इसका नाम बलवाला था अब बरवाला प्रसिद्ध होगया है ॥ +

रुहतक

यह लाहोर से सवा दो सौ मील अग्निकोण में पुराना शहर टूटा फूटा सा है पहले बहुत आबाद था अब ग्यारह हज़ार मनुष्य इसमें रहते हैं इसके पश्चिम में एक तरकरण नाम हिंदुवों का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तीर्थ है रुहतक में पगड़ियां और कलानौर में चमड़े का घोड़ों का असबाब अच्छा बनता है और झज्झर का ज़िला टूटकर उसका कुछ इलाका इसमें मिलगया है और इस ज़िले में चार तहसीलें हैं रुहतक ख़ास जिसमें क़सबा महम और बेरी शामिल हैं दूसरी झज्झर तीसरी सांपला इस में बहादरगढ़ भी है चौथी गुहाना ॥

सरसा

यह ज़िला हिसार के वायुकोण में और लाहौर से डेढ़ सौ मील दक्षिण में है इस जिले में तीन तहसीलें हैं एक सरसा दूसरी फ़ाज़लका तीसरी सुहुवाला इस ज़िले में सज्जी चूना बहुत खेत मिसरी अच्छी होती है ॥

कमिश्नरी अम्बाला

इस कमिश्नरी में चार ज़िले हैं ज़िला अम्बाला ज़िला लुध्याना ज़िला थानेश्वर ज़िला शिमला

अम्बाला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सिक्खोंके समय में यह छोरासा कसबाथा अंग्रेज़ी राज्य में श्रोजपर आयाहै इसमें एक नया उत्तम बाजार बनाहै यह शहर लाहौरसे १६० मील अग्नि कोण में पूर्व को झुकता हुआ है और यहां सेनाकी बड़ी छावनी है और मलक ताजद्दीन उपनाम शाह लखी की एक खानकाहयहां है शहर में प्रायः स्थान पक्के हैं इसका प्रांत खराब है बाग़ नहीं हैं गरमी के दिनों में प्रायः कूयोंका जल सूकजाता है और शहर के अंदरके सब कूयोंका पानी खारी है इस लिये इन दिनों में यहांके रहने वाले जोहड़ों और तालाबका पानी पीयाकरते हैं इस ज़िलेमें पांच तहसील हैं

एक तहसील अम्बालेकी इसमें कसबा मुल्लाना अम्बाले से पूर्वकी तरफ सड़कके किनारे पर है और इसके पूर्वको एक मार्कण्डेय नाम नदी चौमासे में बड़ेवेगसे बहती है पथिक लोगोंको उससे बड़ा क्लेश होताहै और उसकी दलदल दुखदाई होतीहै दूसरी तहसील खरड़ इससे कई स्थान नामी हैं एक मनीमाजरा यहां चावल उत्तम जाति के पैदा होते हैं इस गांव के नीचे एक नदी है उसमें से सोनाभी निकलता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और ढवर नदी मःनीमाजरे के सारे इलाके में वहती है दूसरा गांव सीसवान है इहां लोहे के डोल और कड़ाही अच्छी बनती है तीसरा कुराली यहां रूई की मंडी है अफ़ीम चरस खट्टा अनार लोहा वहुत विकता है तीसरी तहसील जगादरी यहां की भेलियां प्रसिद्द हैं दृढ़ और सुंदर होती है और यहां बड़े बड़े साहूकार रहते हैं और इसका प्रांत सहारनपुर के प्रांतकी तरह शोभित है और इस इलाके में जमना नदी और शाह नहर है इस नहरसे खेतियोंको जलदिया जाता है इस तहसील में चार कसबे हैं एक बूड़िया नहर के किनारे पर है दूसरा मुसतफ़ावाद तीसरा बिलासपुर चौथा खिजरावाद चौथी तहसील नरायणगढ़ इसमें परगना कोटा पहाड़के ऊपर है इस तहसील में ताड़ौरा एक बड़ा क़सबा है वहां एक मजार शाह कमसका है उसका इसमी १० रबिउल्लसानी को बड़ा भारी मेला होता है पांचमी तहसील रोपड़ इस तहसिल में खरंडा एक बड़ा कसवा है सड़क लुध्याने और शम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लेकी सड़क पर है दूसरा बेला इसके इलाके में सत लुज है इस ज़िला अम्बाले की तहसील खरड़ और जगादरी में आमों की बहुतायत है और बहुत अच्छे होते हैं और गीहूं चना चावल ईख कपास नील आदि प्रत्येक जातिके उपजते हैं ॥ ❋

लुधाना

लुधाना अम्बाले के वायु कोण में और लाहौर से एक सौ मील अग्निकोण में पूर्व को झुकता हुआ सतलुज नदी की शाखा के बायें किनारे पर बसा हुआ है इसकी बसावट सुस्वरूप और शोभा वान है पहले यह शहर छोटासा कसबा था अंग्रेजों के राज में छावनी पड़नेसे इस शहर की आबादी बढ़ गई सैकड़ों घर कश्मीरी शालबाफ़ों के यहां हैं इस शहर को सन् ८९९ हिजरी में सुलतान सिकंदर बेटे बहलोल लोधी के ने बसाया था इसलिये लोधी के सबब से लुधाना कहागया बूढ़ी नदी पर एक क़िला सन् ९३२ हिजरी में बनाथा जिसमें अबभी मेख ज़ीन रहता है उसके पास एक और दरगाह है यहां जति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वर्ष रोशनी का मेला हुवा करता है इससे चार कोसके अंतरपर सतलुज नदी बहती है और इसी नदीसे पंजाब देशका प्रारंभ होता है इस ज़िले में चार तहसीलें हैं एक तहसील लुधानेकी सराइ के पास सड़क के किनारेपर है दूसरी तहसील जगरावांकी यह पुराना क़सबा है और इसमें पक्के मकान और बाग़ हैं और बाज़ार बहुत अच्छा है आबादी भी बहुत अच्छी है ———————— आलीवाल और बहादुरी सतलुज़ के किनारे पर दक्षिणकी ओर यह गांव है जहां सरकार अंग्रेज़ीने सिक्खों की सेनाका पराजय कियाथा यह इसी तहसील में है तीसरी तहसील पखोवाल इस तहसील में क़सबा रायकोट चारकोसके अंतरपर पश्चिम की तरफ है इसमें पक्केस्थान और बाज़ार अच्छा है इस क़सबे में आठ हज़ार वासी हैं बागड़ियान गांव में जो सदाबरत मिलता है इस लिये प्रसिद्ध है चौथी तहसील समराला लुधानेसे पूर्वकी तरफ उत्तर को झुकती हुई सड़कके किनारे पर छोटासा गांव है इस तहसील में बहलोलपुर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अफ़ग़ानों का पुराना कसबा बुड़ी नदी के किनारे पर बसता है माछीवाड़ा भी बुड़ी नदी के तीरपर बसा है इस कसबे में शक्कर का व्यापार अधिक होता है गांव कोटला और लोदरान और रहोंके में छींट पलंगपोश लिहाफ़ आदि जो छपते हैं इसकारण प्रसिद्ध है इस ज़िले में राजा नाभे का राज्य है और नवाब मालियर कोटले का भी है मालियर कोटले में सूती खेस और रथ गाड़ी बहुत अच्छे बनते हैं और इहांकी बंदूक भी प्रसिद्ध है इस ज़िले में सब प्रकारका अन्न पैदा होता है पर चना बहुत पैदा होता है॥

थानेश्वर

इस ज़िलेको कुरुक्षेत्रभी कहते हैं लाहौर से एक सौ नब्बेमील अग्निकोण में सरस्वती के बायें किनारेपर बसता है यह पुराना शहर हिंदुवों का तीर्थ है मकबरा शेख चिल्ली का भी यहां है इसका नाम कुरुक्षेत्र हिंदुवों के कहने के अनुसार इस लिये हुवा है कि कौरवों के कुलमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कचे फलको टेंट और डेला कहते हैं और जब वह फल पकजाते हैं तो उसको पेंजू कहते हैं और उसके कचे और पके फूल और फलको इस तहसील के रहने वाले खाते हैं और टेंटका अचार जो सारे हिंदुस्तान भर में खाते हैं और कंड के कचे फल को सांगल और पकना को कंज कहते हैं और जालके फलोंको पील और पीलु कहते हैं इन दोनों वृक्षोंके फलोंको वहांके वासी मेवे की तरह खाते हैं बल्कि दीनोंका निर्वाह प्रायः इनही वृक्षों के फलोंके भोजन से होता है और इस तहसील के सभ वासी प्रायः चौपायः रखते हैं उनका दूध दही घी मक्खन खाते हैं और उन्हें बेच कर प्रायः द्रव्य संचय करते हैं खे ती कम करते हैं और कैंथलका बेर नामी है और कैथल की तहसील के इलाके में और गोहाने में नो सादर भी उपजता है और शोरा कांच चूनियां गोंद अर्थात् ढाकका गोंद पंजाब के और जिलोंकी अपेक्षा से यहां बहुत उपजता है ॥ ❋

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शामला

शामला लाहौर से सौमील पूर्व में अग्निकोण को झुकता हुवा है उसकी उंचाई समुद्र के धरातल से सात हज़ार छैसौ फुट है अम्बाले से पंतालीस मील के अंतर पर पहाड़ की चढ़ाई प्रारंभ होती है कालका से शामले तक बराबर सड़क बनी हुई है इस पहाड़ में शामला सपाटू डिकसाई कसौली नवासर बहुत प्रसिद्ध स्थान हैं पर्वत कसौली और डकसाई और सपाटू में गोरों की सेना रहती है और वहां का जल और पवन नैरोग्य का कारण है और पर्वत शामले का जल और पवन बहुत शीतल और आरोग्यता का देने वाला है प्राय: पश्चिमोत्तर देशीय साहब लोग और कोई २ पंजाब से भी पवन विनिमय अर्थात् तबदील हवा के लिये वहां जाते हैं रामपुर शहर में जो शामले से उत्तर की ओर ५३ तरेपन कोस शतलुज नदी के किनारे पर है वहां प्रतिवर्ष तीन मेले होते हैं एक जनवरी में दूसरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जून में तीसरा अक्तूबर मे इन मेलोंमें चीनयार कंद लद्दाख आदिसे आकर गोट पहाड़ी ऊन रेशम अंगूर सुहागा फ़िरोज़े निर्बिसी विकते हैं॥ ॐ

पर्वतकसौली

यह बड़ा ऊंचा पहाड़ है कालका से इस पहाड़ तक नौमील ऊंची चढ़ाई है इस पहाड़ के पास करनैल लारनस साहब सुर्गवासी ने एक मदरसा बनाया है जिस में गोरोंके बालक पढ़ते हैं शाम लेके ज़िले में एक सिपरींटिंडंट जिसे ज़िलेका काम मिला है रहता है इस मैं तीन तहसील हैं एक तहसील शामला दूसरी तहसील कोटखाई इसमैं लोहे की खान है तीसरी भरौली भगाट

कमिश्नरी जालंधर

इस कमिश्नरी के अनुयायी तीनज़िले हैं एक ज़िला जालंधर दूसरा ज़िला होशयारपुर तीसरा ज़िला कांगड़ा ॐ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जालंधर

लाहौर से जालंधर अस्सी मील है इस ज़िले में पानी बहुत पास है बहुत जगे गज़बर ज़मीन खोदने से पानी निकल आता है यह नगर बहुत पुराना है बादशाही समय में अत्यंत आबाद था इस दूआबे का स्वामी सदैव इसी नगर में रहा करता था अबभी इस कमिश्नरी का मुख्य स्थान इसी नगर में है कमिश्नर साहब यहाही तशरीफ़ रखते हैं पुराने स्थान और समाधें और मसजदें और इमारतें यहा विद्यमान हैं इसके और पास बारह बसतियां पठानो और राजपूतों की हैं और उसके प्रांत में बड़े बड़े रम्य और मनोहर बाग़ है एक खानकाह इमामनासरुद्दीन साहब की बड़ी प्रसिद्ध नगर के बीच में है प्रतिवर्ष उस में एकबार बड़ा मेला होता है और हर जुमे रात को भी वहां पर बहार रहती है उस खानकाह के पास एक नवीन बाज़ार बैनिसटार्ट साहब का बसाया हुवा है वह बाज़ार भी बहुत शोभायमान है पर अभी तक अच्छी रीति से बसाया नहीं है मालिक इस नगर के खत्री

Digitized by eGangotri

नामके कानूनगो हैं इन में से बहुत हिंदू और थोड़े मुसलमान हैं इन की चार ज़ाती हैं सो हिंदी सहगल थापर बेते बाहर इस नगर के एक तालाब कृस्न चंद्र का बड़ा सुहावना स्थान है और एक बड़ा शोभायमान मेला वहांपर प्रति वर्ष हुआ करता है एक देवीका स्थान भी बड़ी छाबनी जालंधर में पहले थी अब इतनी नहीं रही इस जिले में चार तहसील हैं एक मुख्य तहसील जालंधर की सड़क के किनारे पर ज़िले की कचहरी के सन्मुख है इस तहसील में यह कसबे प्रसिद्ध हैं करतारपुर आदमपुर अलाबलपुर दूसरी तहसील नकोदर की यह क़सबा पुराना है पक्के मकान और बाग़ और अच्छी बादशाही मस्जिदें यहांपर थी अब केवल एक बाग़ और एक मक़बरा जहांगीर बादशाह के पीर का रहगया है और सब मिट गए शाहकोट महतपुर बलसियां और लोहयान यह बड़े कसबे इस तहसील में हैं तीसरी तहसील फलौर की जालंधर से अग्निकोण में सतारह मील की दूरीपर सतलुज किनारे है आ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वादी इसकी प्राचीन है एक बहुत पक्का किला सि-
खों के समय का यहां है थोड़े बंगले और बारकें
भी यहांपर हैं कुछ गोरे भी रहते हैं सड़क का बा-
ज़ार अच्छा है नूरमहल यह कसबा नूरजहांबेगम
का बसाया हुआ है एक बड़ी पक्की सुंदर सराय भी-
उसी कालकी अबखंडर होगई है अब उसके बी-
च में थाना है लसाड़ा अपरा बल्क कलतिया
जंडियाला बुण्डाला यह प्रसिद्ध कसबे इस तहसिल
के हैं चौथी तहसील नवाशहर की यह कसबा-
शोभायमान है एक बारादरी और एक तालाब-
और बाग़ बहुत अच्छा यहांपर है इस कसबे में
गुड़ अत्यंतउत्पन्न होता है इसी तहसील में एक-
कसबा राहों नामी अच्छा नगर है आबादीबहुत-
पक्के मकान निवासी यहांके बहुधा खत्री हैं-
लुंगियां चादी कपड़ा और गुड़ इनकी बिकरी
बहुत होती है तिब्बत तक कपड़ा यहांसे बिक
नेके लिये जाता है कसबह बंगा इस तहसी
ल में प्रसिद्ध कसबा है॥ ❀

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

होशयारपुर

जालंधर के ईशान कोणमें होशयारपुर है और लाहौर से ८५ मील पूर्व की ओर बसता है इस जिले में कुछ कोहिस्तान है बाकी सारा देश मयदान में बसता है इस मयदान में पहाड़ीनदी नाले बहुत हैं और इस ज़िलेकी धरती बहुधा बारानी और उर्वरा है और बाग़ भी बहुत हैं जैसे माहलपुर से गढ़ देवालेय तक जो पच्चीस कोसकी दूरपर है बराबर पहाड़ के किनारे पर बाग़ लगे हुए हैं और आंब इस बहुतायत से उत्पन्न होते हैं किसारे पंजाब में यहांका ही आंब काम में आता है इस नगर होशयारपुरके नीचे एक पहाड़ी नाला बड़े वेगसे आता है जिसके कारण नगरके स्थानों का बड़ा बिगाड़ होता है वह पहाड़ी टुकड़ा भूमिका जो इस ज़िलेसे मिला हुआ है दून प्रसिद्ध है दो तीन स्थान इस पहाड़ में प्रसिद्ध है एकतो देवी चिन्तपूरनीका मंदिर यहां हिंदू लोग बड़े निश्चय से यात्रा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करके आते हैं दूसरे देवी धर्मपुर का मंदिर दरहड़
में विद्यमान हैं तीसरे शाह नूरजमाल की दर्गाह^
और हाजीपुर के समीप तीन मीलकी दूरीपर एक
गगनटीला है इसटीलेपर सैंकड़ो प्रकारकी बूटि
यां उत्पन्न होती हैं इस ज़िलेमें चार तहसील^
हैं एक मुख्य तहसील होशयारपुर की इस में^
बड़े कसबे यह हैं खानपुर बहादरपुर शामचौरा
सी हरयाना गढ़देवालय बसीकलां नारूनंगल
बजवाड़ा पट्टी दूसरी तहसील गढ़शंकर की यह
पुराना नगर है और ऊंचे टीले पर बसता है पृथ्वी
उसकी शोभायमान और उर्वरा है माहलपुर^
ऊंजों बलाचौर यह तीन कसबे इसमें नामी हैं
तीसरी तहसील ऊनेकी पहाड़ में है जहांबेदीविक्र
^मासिंह सिक्खोंका गुरू रहाकरताथा यह नगर
पहाड़के ऊपर स्वान नदी के किनारेपर बसता है
बहुत शोभायमान स्थान है नदी नालोंकी सुंदरता
और हरयावल स्तुति करनेके लायक है निदान^
कि यह सबपरगना उपजाऊ और मनोहर है^
नौज़ा अंब बहुत सुंदर स्थान इस तहसील में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है संतोषगढ़ नूरपूर बहपूर कीरतपुर अनंदपु बड़े क़सबे हैं चौथी तहसील दसूहा है यह बस्ती भी पुरानी है स्थान पक्के हैं पर ग्रामीणपन यहां बहुत है बड़े क़सबे इसके यह हैं हाजीपूर मुकेरियां उड़मड़ टांडा म्यानी ॥ *

कांगड़ा

होशयारपूर के ईशानकोण में यह सारा ज़िला हिमालय के पहाड़ों में बसता है घेगी का रोग जिसे गला फूलजाना वा गलड़ कहते हैं यहां बहुधा होजाया करता है लाहौर से १३० एक सौ तीस मील दूर है अत्यन्त मनोहर और सुहावने पहाड़ इसमें विद्यामान हैं और जगह नहरें और फिरने वहते हैं और यहां के रहने वाले सीधे सुभाव और आनंद प्रकृति हैं परंतु अब बुद्धिमान होते जाते हैं सरकार अंगरेज़ी के राज्य में बहुत पक्की सड़कें बनगई हैं यहांतक कि अब कई सड़कों पर गाड़ियां चलती हैं इस ज़िले में हिंदुओं के देवता बहुत हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रथम ज्वालामुखी इस जगह कई स्थानों से
अग्नि की लाटें निकलती हैं दो नहरें पहाड़से
आकर इसस्थान में इस प्रकार पड़ती हैं कि
एक मंदिर के बीच और दूसरी मंदिर के बाहर
उनकी शोभा लायक दर्शनके है ज्वालामुखी
पहाड़ कांगड़े से १६ सोलहकोसकी दूरीपर है
दूसरा महामाया का मंदिर उसको देवीका भु
वन भी कहते हैं यह कांगड़े से आध कोसपर
विद्यमान है कांगड़े से भुवन में बहुत चमत्कार
है क़िला इस नगर का दृढ़ और प्राचीन है
इस क़िले के अंदर दो मंदिर और एक कपूर सागर
नाम तालाव बना हुवा है पानी उसमें गहरा है
सिवाय इसके बहुत मंदिर और प्राचीन स्थान
भी उसके अंदर है हिंदु लोगों का कथन है कि
यह किला देवताओं के हाथका बनाया हुआ है
वस्ती इस नगर की सदृश उपद्वीपके है एक ओर
उसके बानगंगा बहती है और दूसरी ओर पाता
ल गंगा यह दोनों नदियां क़िलके नीचे इकट्ठी होजा
ती हैं ब्राह्मण कहते हैं इस ज़िल में ३६० तीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सो सात तीर्थोंका जल आकर इकट्ठा हुआ हैं यह जल समूह संगम कहलाता है इस निमित्त यहां पर स्नान दानकरना पुन्य हेतु लिखते हैं आबकोसपर धर्मसाला है जिसको भागसू भी कहते हैं वहांपर अंग्रेज़ी छावनी रहती है और उसी स्थानमें ज़िले की कचहरी होती है यहांसे बर्फ का पहाड़ बहुत समीप है तीसरे मनीकर्ण कांगडेसे ८० अस्सी कोसकी दूरीपर ईशानकोण में कुलूके पहाड़ में है यहां कई स्थानोंमें गरम पानी खौलता हुआ भूमी से ऐसा निकलता है कि जिसमें रोटी और चावल आदि अच्छी रीति से पकसकते हैं हिंदू उसको स्नान करते हैं चौथे तालाब रवालसर कांगडे से पूर्व में ५० पचास कोसकी दूरीपर मंडीके इलाके में विद्यमान है चारों ओर इसतालाव के पहाड़ का घेरा दीवार की भांत घिरा है एक मीलसे कुछ कम तालावका घेरा है कई टीले पहाड़ के इस तालाब में तिरते हैं जो संख्या में सात हैं सब टीलोंपर नरसल आदि के वृक्ष उगे हुए हैं एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

टीला जो सब से बड़ा है लगभग १३ तेरह फीट लंबा
और ५ पांच फीट चौड़ा है हिंदू इनको भी पूज
-ते हैं सिवाय इनके और कई देवताओं के मं
दिर इस ज़िले में हैं जैसा कि जयंती देवी बैजनाथ
त्रिलोकनाथ आदि इस ज़िले में पांच तहसील
हैं एक मुख्य तहसील कांगड़े की दूसरी नूरपुर
की तहसील समुंदर के धरातल से नूरपुर दो ह-
ज़ार फीट ऊंचा है अच्छी बस्ती है काश्मीरी लोग
बहुत बसे हैं और पशमीने का व्यवहार करते हैं
तीसरी तहसील हरीपुर की चौथी नादौन की
पांचवी कुल्लू की तहसील और एक नायब तहसी
-लदार बलाच के मुकाम में कुल्लू के इलाके
में रहता है इस ज़िले में प्रसिद्ध नगर यह है
नादौन जो ब्यासा नदी के किनारे पर बसता है
दीरह सूजानपुर यह भी उसी नदी के किनारे पर
है इस नगर के मध्य में एक वर्गात्मक मयदान
१०० एक सौ बीघे का बना हुआ है इस ज़िले में
ऐसा मयदान और स्थान में नहीं है हरीपुर गुला
-रना सुलतानपुर जिसको कुल्लू भी कहते हैं मंडी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जिस में मंडी का राजा रहता है चंबा यह चंबा-
के राजा की आज्ञा में है इस ज़िले में यह पदार्थ
उत्पन्न होते हैं कि पालम के इलाके में धान अ-
-र्थात् चावल बहुत अच्छे उत्पन्न होते हैं-
और सरकार अंग्रेज़ी की अमलदारी में कई-
स्थानों में चाह उत्पन्न होती है और गेहूं चना-
मकई जौ अलसी आदि भी उपजती है और
कुलू के इलाके में अफयून चर्स पशम गूंट अ-
र्थात् ठिगने क़द का पहाड़ी घोड़ा और चौरी अर्थात्
जंगली गाय की पूछ का मोरछल और कस्तूरी बहुत
होती है मंडी के इलाके में दोस्थानों में नमक की
खान है एक को गोमा और दूसरी को दुरंग क-
हते हैं इन खानों से लाली लिये हुए काला नोन
उत्पन्न होता है वही इस देश में बहुधा खर्च में-
आता है और चंबा के इलाके में जीरह धूप अन-
अखरोट उत्पन्न होते हैं धर्मसाल से दो कोस-
की दूरी पर एक गांव गुनयारह है उसके-
समीप एक खान है वहां से संगसेल निकलता
है जो खपरों की जगह इस देश में छप्परों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर पाटते हैं भागसू और कांगड़ा आदि के सारे मकान इसी संग सेलसे पटे हुए हैं ॥

अमृतसर की कमिश्नरी

इस कमिश्नरी में तीन ज़िले हैं ज़िला अमृतसर ज़िला गुरुदासपुर ज़िला सियालकोट

अमृतसर

पहले समय में अमृतसर एक छोटा गांव था उस काल इसका नाम चक्क प्रसिद्ध था गुरु रामदास जो चौथा गुरु सिक्खोंका प्रसिद्ध है और जो सन् १५८१ ईस्वी में मरा उसने इस चक्कको बहुत बसाया उस समय इसका नाम रामदासपुर प्रसिद्ध होगया फिर उसने एक बड़ा तालाब उसके अंदर बनवाकर उसका नाम अमृतसर रक्खा अर्थात् अमृतका तालाब उस तालाब के कारण इस शहर का नाम भी अमृतसर होगया महाराजा रणजीत सिंह के समय में इसकी बस्ती बहुत बढ़गई यहांतक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कि सारे पंजाब में अनुपमेय होगया और अप-
नी अच्छी बनावट और सूरत और अपनी -
और अपने रहने वालों की सफाई और सुंदर-
ता के हेतुसे लाहौर और उसकी प्रजासे भी बढ़
गया अब एक लाख मनुष्यों से अधिक वहांपर
बसते हैं सूरत इस शहरकी यह है कि पक्का -
कोट खंदकदार बड़े बाज़ार बदररोए पटी हुई -
महल्ले कटड़ों के नामसे प्रसिद्ध हैं बीचों बीच -
शहर के सिक्खों के गुरु का मंदिर तालाब के म-
ध्य में बना हुआ है और उसमें ग्रंथ रक्खा है बड़ी
पूजा उसकी होती है समीप उसके बाबा अटल -
का देहरा बड़ा ऊंचा है वहां दिन रात भंग घुटा क-
रती है और यह शब्द वहांके भिक्षुकों का है बाबा
अटल पकी पकाई घल अर्थात् पकी पकाई भेज -
पुजारी भाई जी कहाते हैं जो मनुष्य ग्रंथ पढ़े व-
ह कोई जाती हो भाईजी का उपनाम उसको मि-
ल सकता है बाहर नगर के महाराजा रणजीतसिं-
ह का बनाया हुआ रामबाग है सिवाय इस-
के बहुत बारह दरियां रईसों की बनाई हुई चा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

-ऐं और शहर के हैं इस ज़िले में चार तहसील हैं एक मुख्य तहसील अमृतसर की उसमें बड़े गां-व यह हैं सोहियांकलां कूडाला सुलतानविंड सितयाला जुदाला मंतेवाल महतावकोट कसबा-जंडियाला शहर अमृतसर से १० मील के अंतरा सड़क पर है यथार्थ में नाम उसका जंडुआलय था अर्थात् जंडु का घर जंडु नाम एक जट का है जिसने इसको बसाया था और आलय संस्कृत में घर को कहते हैं अब उसको बिगाड़ कर जंडिया-ला कहने लगे इस कसबे में एक पक्का मंदिर गुरु हंदाल का बना हुआ है यह गुरु उन दस गु-रुओं में से जुदा है जो बाबा नानक की गद्दी पर बैठते आए हैं और जो कि गुरु आकिलदास बे-टा गुरु हंदाल का मुद्दत तक जागीरदार जंडिया-ले का रहा है इस निमित्त इस कसबे को गुरु का-जंडियाला भी कहते हैं दूसरी तहसील तरन-तारन १३ मील अमृतसर से दक्षिण ओर है इस कसबे में गुरु अर्जुन जो गुरु नानक के पांच-वी पीढ़ी में गद्दीपर बैठा था उसका मंदिर और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महाराजा रणजीत सिंह का बनाया हुआ एक ता-
लाब है उसके ईशानकोण में एक मीनार बहु
त ऊंचा कुंवर नौनिहाल सिंह का बनाया हुआ
है २५१८ दोहज़ार पांचसौ अठारह गांव जागीर
में मंदिर के खर्च निमित्त है बड़े क़सबे इस परग-
-नेके यह हैं मुख्य तरनतारन गोंदवाल फत-
हवाद बेरवाला जलालाबाद और यह चारों-
व्यासनदी के किनारे पर हैं अटारी नेष्टा र नगढ़
तरहाली तीसरी रैयाकी तहसील अमृतसरके २५
मील उत्तर में है इस इलाके में उत्तम जातिके
चावल उत्पन्न होते हैं सर्प इस इलाके का बड़ा
विषधर होता है जिसको काटता है वह मनुष्य तत्का-
ल मरजाता है प्रसिद्ध क़सबे इस परगने के यह हैं
मुख्य दाऊद मरुबाल नारोवाल चकयाली काला-
खताई जंडियाला कलसियां औलियापुर क़सबा
नारोवाल चौथी तहसील अजनाला १५ मील
अमृतसर के उत्तर में है सात क़सबे इस त-
हसील में प्रसिद्ध हैं सौढ़ियां यहांकी लाल मि-
-र्च नामी है भल्लर बनकी क़सबा रामदास—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चमारी जसड़वाल इस परगने में और सारे अन्नों से गेहूं और चावल बहुत अधिक उत्पन्न होते हैं ॥ +

गुरुदासपूर

लाहौर से ७५ पचहत्तर मील ईशानकोण की ओर उत्तर को झुकता हुआ है यह शहर गुरुदासपूर जो अब ज़िलेका सदर स्थान है प्रथम एक छोटासा गांव था पर अब दिनो दिन बस्ती उसकी बढ़ती जाती है इस ज़िले में चार तहसील हैं एक मुख्य तहसील गुरु दास पूर की इस में कई बड़े कसबे प्रसिद्ध हैं एक शहर दीनानगर पुराना क़सबा है आस पास उसका अत्यन्त सुंदर और दर्शनीय है और आंबके वृक्षोंकी यहांपर बड़ी बहुलता है चारों ओर इसके सुंदर बाग़ हैं राजा रणजीत सिंह गरमी के मौसम में दो-दो तीन तीन महीने इसी शहर में ठहरा करते थे दूसरा कसबा बहरामपूर बहुत प्राचीन है उसकी सारी पक्की बनावट है खत्री लोग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बहुत बसते हैं इस कसबे में शिकार बहुत मि
लता है और आमकी बड़ी बहुतायत है तीसरा
कसबा कलानौर जो पहले बादशाही समय में
राजधानी होचुका है प्राचीन और अच्छा शहर
है और पक्की बनावट है चौथा काहनूवान
बड़ा कसबा है उसके समीप एक झील विद्यमा
न है उस में एक बारहदरी महाराजा शेर सिंह
की बनाई हुई है वहांपर शिकार बहुत मिलता है
दूसरी तहसील पठानकोट में है यह पुराना शहर
है एक किला बादशाही शाहजहां के समय का
बनाहुआ है इस जगहपरथा अब वह तोड़कर
उसकी ईंटों से पुल और कारखाने माधोपुर में
बनवाए गए दफ़तर नहरका माधोपुर में रहता
है इस तहसील में एक बड़ा कसबा सुजानपुर
बहुत बसता है काश्मीरी लोग उस में बहुत
बसते हैं हलदी इस इलाके में बहुत उत्पन्न हो
ती है और लोई और ऊनकी पट्टी बनती हैं ती
सरी तहसील शकरगढ़ की यह एक बड़ा गांव है
इमारत इसकी कच्चीपर तहसील और कोतवाली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सरकारने पक्की बनाई है इस तहसील में कंजरूड़ बड़ा कसबा है चौथी तहसील बटाला॰ यह शहर अमृतसर से ईशान कोण की ओर है प्राचीन शहर है बस्ती उसकी बहुत बड़ी और॰ रमणीय है शेरसिंह की बनाई हुई एक बारहदरी और तालाब बहुत अच्छा इस स्थान में है शहर के चारो ओर बाग़ हैं निवासी यहांके बुद्धिमान और चतुर हैं पहले समय में इस स्थान में शास्त्र विद्या और २ विद्याओं के नामी पंडित और कवि थे इस काल भी एक कुल साहबका हज़रत मियां सुनियों गृह और इतिहास में लिखनेके योग्य है उनके पास पुस्तकालय भी अच्छा है और यह मनुष्य अत्यन्त दयावान और गुण ग्राहक है इस शहर की रेशमी और सूसी और लुंगी और गुलबदन और रेशमी कपड़े और मुख्य करके दरयाई आदि प्रसिद्ध हैं इस तहसील में डेरह नानक बेदियोंका कसबा प्रसिद्ध है यह लोग गुरु नानक की संतान के हैं और एक बड़ा सुनहरी मंदिर गुरु नानक के॰

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वैठनेके स्थानपर बनाहुआ है जिसकी यात्राको सिक्ख लोग कोसोंसे आते हैं और फतहगढ़ और श्रीगोविंदपुर — कादियां — यहभी बड़े कसबे इस तहसील में हैं ॥

सियालकोट

लाहौरसे पैंसठ मील उत्तर में है यथार्थ में यह शहर शालिकोट है किस लिये कि इस शहरका किला राजा शालिवाहन का बसाया हुआ है उसी नामसे इसका नाम शालिकोट रक्खागया था पर मनुष्योंकी अशुद्धतासे सियालकोट प्रसिद्ध होगया है उससमयका वह किला अब तक विद्यमान है अबयह किला सरकार अंग्रेज़ी के स्वाधीन है बड़ीछावनी अंग्रेज़ी इस शहर में रहती है चारोंओर नगरके थोड़ी बस्तियां पुरह के नामसे प्रसिद्ध हैं कागज़ इस शहर में अच्छा और पुष्ट बनता है सारे पंजाब में इस कागज़ की खरीदारी होती है इसशहरके सबमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एक नदी एक नामकरके बहती है उसका पानी कागज़ बनानेके निमित्त बहुत फलदायक बता ते हैं इस ज़िले में चार तहसील हैं एक तह सील मुख्य सियालकोट की जो नगरके बाह र है दूसरी तहसील उस्कहको यह गांव कई प्रसिद्ध शहरोंका केंद्र समान अर्थात् वजीराबाद और पसरूर और सियालकोट और गूजरांवा ला यह चारों नगर दस दस कोसके अंतरसे चारों ओर उसके बसते हैं तीसरी तहसील पसरूरकी इसका नाम पुरसरूरथा अब पस रूर होगया यह शहर प्राचीन है और मका नात भी पक्केहैं खरबूज़े इस स्थानके प्रसिद्ध हैं वह एक मध्य जाति खरबूज़े की है जिसको तोरी कहते हैं अत्यन्त मीठी और हरे रंगके इसी स्थानमें उत्पन्न होतेहैं चौथी तहसील ज़फ़र वालकी यहस्थान भी प्राचीन है पक्के मकान इसमें हैं इस परगनेमें चना नहीं उत्पन्न होता और जगहसे यहां चना मोल देकर लाते हैं इस सारे परगनेमें चनेकी खेती नहीं होती क्यों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कि यहांकी भूमि में चना बोया जावे तो कीड़ा दाने को खाजाता है॥ ❋

कमिश्नरी लाहौर

इस कमिश्नरी में तीन ज़िले हैं जिला लाहौर ज़िला फीरोज़पुर ज़िला गूजरांवालह

लाहौर

यह शहर पंजाब देशकी राजधानी है यहांपर श्री युत नवाब लफ़टनेन्ट गवरनर बहादुर पंजाबके निवास करते हैं लिखाहै कि राजा रामचंद्र के दोबेटेथे एक राजा लवथा जिसने लाहौर बसाया दूसरा कुश उसने कुश्तूर बसाया था जो एक तहसील लाहौरकी है अबहमारे समय में उसको क़सूर कहते हैं यह कसूर अर्थात् अपराध करते हैं ऐसे ध्योंहै कि कुश्तूर जो शुद्ध नाम उसका है वही कहें और लिखें लाहौरका पहले नाम लवपुरथा बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वोलनेके कारण लाहोर होगय यह नगर बहुत प्राचीन है उसके खंडर भी देहली के खंड़रों के समान दूरतक फइले हुए हैं जिनसे जाना जाता है कि उसकाल में बहुत दूरतक बसता होगा स्वरूप इस नगरका हमारे समय में यह है चारों ओर पक्काकोट है और एक खाई से घिरा है आबादी बहुत खिच पिच गली कूंचे तंग है घर बहुत ऊंचे चार चार पांच पांच खनोंके मकान पुरानी हिंदुस्तानी सूरतपर बने हैं कि नवीन पवन भूलकर भी नहीं आसकता आकाश केवल छतपर जानेसे दृष्ट आता है इसी कारण इस नगरका जलपवन विगड़गया है रावी नदी नगरसे एक कोसकी दूरी पर वायव्य कोण में बहती है परजब चढ़ावपर आती है तो नगर के नीचेतक आजायाकरती है और एक नाला उसका नगर के नीचे सदा बहता है इस नगर के बाहर अनारकली में भी बड़ी बस्ती है और प्रायकर्के साहब लोगों और सौदागरों की कोठियां तो वहांपर ही हैं और छावनी मियांमीर स्थान में लाहोरसे तीनकोसकी दूरीपर जुदी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बस्ती है लाहौर नगर समुद्र के धरातल से ९०० नौ
सौ फ़ीट ऊंचा है कलकत्ते से सीधी राह ११०० ग्यार
ह सौ मील है सड़क की राह १३५१ मील की दूरी
वायव्य कोण की तीन मील के घेर में बसता
है इस जगह और श्रीयुत लफ़टनेंट गवरनर
साहब बहादुर पंजाब और फिनान्शल कमि
श्नर साहब बहादुर और जुडीशल कमिश्नर बहा
दुर और कमिश्नर साहब बहादुर कचहरियां
और ट्रेज़री की कचहरियां और पंजाब की पाठशा
लाओं के डाइरक्टर साहब बहादुर और हलके
लाहौर के इन्सपिक्टर साहब बहादुर का महक
में और ज़िले की कचहरीयां है लाहौर के प्रसिद्ध
और देखने योग्य स्थान यह हैं मुसम्मन बुर्ज —
वजीरखां की मसजिद — बादशाही मसजिद —
शालामार बाग़ — घोड़े शाह की खानकाह —
शाह बलावल — शाहदरह — मियांमीर —
मज़ार दाता गंजबख्श — मद्रसाल — रणजीतसिंह
की समाध — इस ज़िले में चार तहसील हैं एक
मुख्य तहसील लाहौर की दूसरी शरक़पुर की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस तहसील में एक गांव ननकाना साहब तीस कोस की दूरीपर पश्चिमकी ओर है इसी जगह सिक्खों का आचार्य्य गुरु नानक उत्पन्न हुआ था उसके स्मरण निमित्त एक मंदिर और एक तालाव वहांपर बना हुआ है इस तहसील के इलाके में चावल और तंवाखू बहुत उत्पन्न होता है तीसरी तहसील चुनियां की इस तहसील के इलाके में कपास बहुत उत्पन्न होती है चौथी क़सूर की इस कसवे में पंजावी जूता और घोडों की काठियां बहुत सुथरी बनती है और सारे पंजाव में प्रसिद्ध हैं॥

फ़ीरोज़पुर

लुद्धाने के पश्चिम और लाहौर से अग्निकोण में चालीस मील की दूरीपर सतलुज नदी के बाएं किनारेपर वसता है यह फीरोज़पुर का ज़िला जंगल कहलाता है सिवाय आक और झडबेरी वा वकायनके वृक्षों के और कोई वृक्ष इस ज़िले में कठिनता से दिखाई देता है इस जग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की सौग़ात गर्द और आँधी प्रसिद्ध है पश्चिम
के बादशाहोंकी चढ़ाई और सदैवकी लड़ाई
से यह ज़िला उजड़गयाथा अब अंगरेजीराज्य
में फिरवसा है और वृक्षभी अनेक प्रकार के
मुख्यतासे नगर में और उसके चारों ओर लगा
ए गए हैं छोटीसी बस्ती है पुराना किला जो इस
नगरके अंदरथा गिरायागया अब एक नवीन
क़िला अंगरेज़ी आज्ञानुसार गोदाम और संग्राम
के पदार्थोंके निमित्त नगरके बाहर निर्माण
किया गयाहै यहांपर छावनी भी है और अने
क तरहकी ज़ाती यहांबसती है और मुख्यता
से कश्मीरी राजपूत और पठान पररोड़े जाति
के मनुष्य यहांबहुत बसते हैं यहांपर चार
तहसील हैं एक मुख्य फीरोज़पुर की दूसरी ज़ी
रहकी यह एक गांव है तीसरी तहसील
मोगह की यह लुधाने की सड़कके ऊपर है
चौथी तहसील मुक्तसर की शुद्ध नाम इस मुक्त
सरका मोक्तसर है इसस्थानपर एक बड़ातला
व है दो ओरसे पक्का और दो ओर से कच्चा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है इसमें सिक्ख लोग स्नान करते हैं और इस
तीर्थ का स्नान मुक्तिदायक समझते हैं क्योंकि
गुरु गोविंदसिंह जो कि गुरु तेग़बहादुर का बेटा था
जिसने सिक्खों के चलन बदले और इस जाति को
शास्त्र विद्या सिखलाई और सिक्ख से नाम सिंह अर्था
त् शेर उसने बदला और बाल मुंड़वाने को निषेध
किया और आज्ञा करी कि लोहे का चक्र सिर पर रक्खा
करें और ग्रंथ का दूसरा भाग उसने आप रचकर उस
का नाम दश ग्रंथी रक्खा यह मनुष्य दशवां गुरु
सिक्खों का है औरंगज़ेब आलमगीर बादशा
ह के समय में मुसलमानों से वह बहुत लड़ा
निदान लाहौर से निकाला गया फिर वह इस
मुक्तसर पर लड़ा और बड़ा संग्राम हुआ जो
कि वहां बहुत सिक्ख मारे गए उनकी समाधें
वहांपर सिक्खों ने बनवाई हैं और नाम उनका
गंज शहीदान रक्खा है इस स्थान एक मेला
गुरु गोबिंद सिंह की बैठक की जगह हुआ कर
ता है गुरु गोबिंद सिंह इस स्थान पर समाधि
स्थ नहीं हुआ बरन वह दक्षिण में नादेन

Digitized by eGangotri

नगर के बीच सन् १७८० ईस्वी में मराथा अब मुक्तिसर में एक बड़ा मेला सिक्खों का प्रतिबर्ष हुआ करता है और सैकड़ों बैरागी और साधु आते हैं और इस स्थान पर जिसको वे लोग दरबार कहते हैं रात्रिदिन नृत्य और गान हुआ करता है इस कारण इस तालाब को मुक्तसर कहते हैं अर्थात् मुक्तिपाने का तालाब यही नाम इस क़सबे का प्रसिद्ध होगया है ॥ ❋

गूजरांनवाला

पहले यह ज़िला शेखूपुर में नियत हुआ था फिर वहांसे बदलकर गूजरांवाले में आया यह क़सबा रणजीतसिंह की जन्मभूमि है इसी कारण उस की समाधि वहांपर भी है रणजीतसिंह का पिता जो महासिंह था उसने इस क़सबे के बसाने में बहुत श्रम किया था यह नगर लाहौर से चालीस मील की दूरी पर वायव्य कोण को झुकता हुआ बसता है बस्ती उसकी बहुत अच्छी है मिलनसार और सुंदर रूप के मनुष्य बसते हैं — पक्के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मकान अच्छा बाज़ार बना हुआ है चारों ओर व्र
क्ष लगे हुए हैं और बाग़ भी हैं पर हरीसिंह के
बाग़ में आम अच्छा लगता है और सड़क के
किनारे पर अंगरेजों ने पक्की सराय और डाक
बंगला और डाकघर बनाए हैं यहां पर कई बड़े
तालाब हिंदुओं के हैं इस ज़िले में तीन तहसील
हैं एक मुख्य तहसील गूजरांवाल की दूसरी तह
सील वजीराबाद की यह प्राचीन नगर है
और बहुत अच्छा बसा हु है सिक्खों की अमल
दारी में अबूतबेला नाम फरासीस ने जो रण
जीत सिंह का नौकर था इस नगर को बहुत ब
साया अर्थात् चौपड़ का बाज़ार और कोट
उसी का बनवाया हुआ है और पलकू नदी के
किनारे पर एक मकान मुसम्मन बुर्ज बहुत मनो
हर और सुहावना बना हुआ है और उसके अहा
ते में एक बागीचा भी है रणजीतसिंह जब इस ओ
र आते थे इसी मकान में उतरा करते थे और इसी
नदी के समीप एक बाग़ दीवान ठाकुरदास का भी
प्रसिद्ध है पहले अंगरेजी छावनी इसी स्थान में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

थी अब वह छावनी सालकोट में चली गई वज़ीराबाद नवाब वज़ीरखांन का बसाया हुआ है इस निमित्त उसको वज़ीराबाद कहते हैं चिनाबनदी इस नगर के नीचे बहती है ॥ *

इस नगरके समीप दो कोसकी दूरीपर एक गांव है उसको धौंकल कहते हैं यहांपर मूर्खों ने पीखराब जो सुलतान सरवरके नामसे प्रसिद्ध था उसकी बैठक के स्थानको पूज्य मान लिया है और हज़ारों पहाड़ी मनुष्य और सारे पंजाब के अज्ञान उसमें श्रद्धा रखते हैं प्रति वर्ष एक बड़ा मेला यहांपर होता है क़सबा सोधरा वज़ीराबादके समीप तीन कोसकी दूरीपर प्राचीन नगर है अयाज़ का बसाया हुआ है जो महमूद ग़ज़नवी का प्यारा दास था उस समय के कई मक़बरे भी आजतक बचे हुए हैं और पक्के बने हुए हैं और अयाज़की क़बर लाहौर के बीच पुरानी टकसाल में है इस तहसील में एक क़सबा अलीपुर भी बड़ा है यह नगर अलीमहम्मद खां का बसाया हुआ है इसकारण इसका नाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अलीपुर रक्खा गया था फिर सिक्खोंके जबहस्तगत हुआ तो इस कसबेका नाम अकालगढ़ रक्खा यह कसबा बहुत शोभायमान है खत्री जाति यहांपर बहुत बस्ती है मुलतान वाला दीवान मूलराज इसी स्थानका वासी था मकान और बाग़ और रहने वाले इसस्थान के सब शोभायमान हैं रसूलनगर भी एक प्रसिद्ध शहर इस देशमें है बहुधा नगरके मकान पक्के पर थोड़े कच्चेभी हैं पीर महम्मद और जान महम्मद इसनगरके बसाने वाले बड़े बलवान् थे रणजीतसिंहका पिता जो महांसिंह था उसने छल और झूठी शपथ और प्रतिज्ञा करके यहनगर अपने आधीन किया था और सब मसजिदें और मुसलमानोंके मकान ऊजड़ करदिए और उसके स्थानों में अपने देवताओंके मंदिर बनवादिए और इस नगर का नाम रामनगर रखदिया इसनगरपर अन्त की लड़ाई सिक्खों की अंगरेजोंसे भी हुई थी चिनाब नदी इसनगरसे एक कोसकी दूरीपर बहती है तीसरी तहसील हाफ़ज़ाबादकी यहभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्राचीन नगर है पक्के मकान और दोजाति के खत्री लोग इस में बसते हैं चोपड़े और कपूर इन दोनों में ऐसी बड़ी शत्रुता है कि इन में से एक जाति कभी दूसरे के निमित्त सत्य नहीं बोलती है

कमिश्नरी मुलतान

इस कमिश्नरी में चार जिले हैं मुलतान गुगेरह झंग. मुज़फ़रगढ़॥

मुलतान लाहौर से दो सौ मील नैऋत्य कोण में चिनाब नदी के बाएं किनारे पर बसता है शहर का कोट पंदरह हाथ ऊंचा है यहां की बस्ती प्राचीन है पर कुछ सुंदर नहीं है नगर के बीच पुरानी मसजदें और कबरें जगह जगह दृष्ट आती हैं और उस के चारों ओर खजूर और आम के वृक्ष बहुतायत से हैं मुलतान की शोभा में यह शेअर सब पढ़ते हैं बैत चार चीज़स्त तोफ़ए मुलतान गरदो गर्मा गदा व गोरिस्तान इस का यह अर्थ है कि यह चार पदार्थ मुलतान की सौग़ात गर्द—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गरमी — मंगते — और — कबरें कबरस्तान का वृत्तान्त यहाँतक है कि कोई गली कूंचा ऐसा नहीं है जिस में कोई कबर न हो और गरमी की ऐसी अधिकता है कि ग्रीष्म ऋतु में नर्क के समान जानपड़ता है मंगतों की यह दशा है कि जिस ओर देखो हाथ पसारे हुए दृष्ट आते हैं और गर्द ऐसी सूक्ष्म है जैसा पिसा हुआ सुर्मा आंधी चली और अंधकार छाया फिर यह नहीं जाना जाता कि हमारे आगे पीछे क्या है आती है मानो एक प्रलय आता है इस लिये यह चार सौगात प्रसिद्ध हैं और इस नगर के व्यवहार के निमित्त यह पदार्थ हैं रेशमी कपड़े सूती गलीचे — रेशमीन खेस — दराई — लुंगी — खजूर — सज्जी — काले तिल — इस ज़िले में अत्यन्त उत्पन्न होते हैं यह वही नगर है जहांपर अंगरेज़ों की दीवान मूलराज से लड़ाई सन १८४८ ईसी में हुई थी और दीवान मूलराज कैद होकर देश से निकाला गया था जो बनारस में पहुंचकर मरगया इस नगर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

के चारों ओर की पृथ्वी उर्बरा है इस ज़िले में बा-
स्ती कम है और जंगल बहुत है गाय भैंस यहां कम
मिलती हैं ऊंट और गधे खच्चर आदि बहुत मिलते हैं
यहांके मनुष्य गाय भैंसोंको अपने सब पदार्थों से
प्यारा समझते हैं और दूध दही की बहुतायत
है इस नगरके पांच मकान देखनेके योग्य और
प्रसिद्ध हैं क़िला शाह बहावल हक्का का रौज़ा
रौजाह रुकनआलम — शम्सतबरेज़ का रौज़ा —
ज़ियारत मूसापाक शहीद — सूरजकुंड —
इस ज़िले में पांच तहसील हैं एक मुख्य तह
सील मुलतानकी दूसरी सिद्धोंकी सराय की —
तीसरी तहसील शुजाआबादकी चौथी लोध-
-रां पांचवी मैलसी ॥ ❀

ज़िला गुगेरा

कसबा गुगेरा लाहोरसे अस्सी मील नैऋत्य कोण
में रावी नदीके बांए किनारे पर बसता है इस
ज़िले में जंगल बहुत है जिसको बार कहते हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और यह कोसोंतक चलागया है और यहां जल कम मिलता है और इस जंगल में वृक्ष केवल जंड़ करील और पीलूके हैं उनके फल निर्धन मनुष्य खाते हैं और इस सारी कमिश्नरी में इसी प्रकार का जंगल है इस जिले में पांच तहसील हैं एक मुख्य तहसील गुगेरह की इस परगने की उत्तर की ओर पश्चिम भूमिको सोतकरावी नदी और कई नालोंसे जलसंयुक्त रहती है इस कारण अन्न अपनी ऋतुमें बहुत होता है दूसरी तहसील सैयदवाला की यह नगर रावी नदीके किनारे पर वार के बीच विद्यमान है इसस्थल में वृक्ष बहुत हैं यह कसबा सदैव से गीलानी सैयदोंका है सैयद मीर जीलानी ने इसको बसायाथा इसके पूर्वाभिमुख एक किला है यहां खेती अल्प होती है रावी नदीकी सीलके कारण दक्षिण की ओर असाढ़ी फस्ल में गेहूं जौं और चना थोड़ासा उत्पन्न होजाता है चारपाये पशु यहां पर बहुत हैं यहांके मनुष्य दूध दही बहुत खाते हैं इस परगनेकी पृथ्वीखारी है इसकारण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खेती नहीं होती है तीसरी तहसील हुजरेकी-
है इसको शाहमुकीमका हुजरा कहते हैं इस-
नगर में मकान पक्के और कच्चे दोनों प्रकार के
हैं १५०० पंदरहसौ के अनुमान घर इसमें-
बसते हैं और यह शाहमुकीम कादरी का बसा-
या हुआ है यह मनुष्य उत्तम कुलका था सिक्खों
के राज्य में उसकी सन्तान सेना युक्त और स्वतंत्र-
रही पर साहबसिंह बेदी ने इस नगर को लूट कर-
मुकीमशाह की संतान को वध किया उनमें से जो
कुछ बच रहे थे उनकी संतान अब भिक्षुकों के स-
मान निर्वाह करती है चौथी तहसील पाकपट्टन-
की लाहौर के दक्षिण को नैऋत्य कोण में झुकता
हुआ सतलुज और रावी नदी के बीच एक टीले
पर बसता है फतहपुर गुंगेरे से पाकपट्टन-
पैंतालीस मील दक्षिण को नैऋत्य कोण में झुक-
-ता हुआ बसा है शेख फरीद उद्दीन गंजशक-
-र चिश्ती की दरगाह यहांपर है यह नगर भी प्रा-
-चीन है हिंदी इतिहासों में इसका नाम अजो-
-धन लिखा है अब पट्टन प्रसिद्ध होगया इस-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

नगर की बस्ती टीलेपर है यहां से पांच कोस पर ब्या
स और सतलुज नदी बहती है पांचवीं तहसील
हड़पा की इसपरगने में कोट कमालिया कमा
लखां खहरल का बसाया हुआ है उसके वंशमें
कमालियेका रईस अर्थात् प्रतिष्ठित महम्मद सर
फ़राज़खां अब विद्यमान है यह बड़ा क़सबा है
पक्के और बड़े बड़े मकान हैं इस में बाग़ अत्य
न्त हैं यहांका अनार मीठा और बड़ा होता है
इस स्थान में गेहूं जौ और चना बहुत उत्पन्न हो
ता है काबुलके आस पासके व्यवहारी मनुष्य
गरमी ऋतु में इस स्थान पर हिंदोस्तान के जानेके
निमित्त आया करते हैं ५११९८ मनुष्य इसपरगने
में बसते हैं २३३१ मील क्षेत्रफल है॥

झंग

मुलतान के ईशानकोण में अरब के [illegible]
हुआ बसता है इसीको झंगसियाल्ले कहते हैं
लाहौर से एकसौ पंद्रह मील [illegible]

Digitized by eGangotri

ग को झुकता हुआ बसता है॥ *

चिनाब नदी उस्से एक कोसके अंतर पर बहती है यह नगर प्राचीन्न है और सियालों की जाति का बसाया हुआ है इस नगर में चार हज़ारके लगभग घर और तीनसौ दूकानें बसती हैं और हर भांति के मनुष्य यहांपर बसते हैं पहले शहरके चारों ओर कच्चा और दृढ़ कोट बना हुआ था अब टूट फूट गया पहले अहमदखान सियाल यहांका हाकिम था रणजीत सिंहने उसे पकड़कर पहले क़ैद में रक्खा फिर छोड़ देनेके पीछे सराय सिद्धो में जो मुलतानके ज़िले में है मरा हीर इसी शहर में उत्पन्न हुई थी जिसके गीत सारे पंजाब में गाए जाते हैं एक स्थान उसका भी मेलेके निमित्त बना हुआ है इस ज़िलेमें तीन तहसील हैं एक तहसील मुख्य झंग की यह शहर सियाल जातिका बसाया हुआ है यहांपर खरबूज़ा और तरबूज़ अच्छा उत्पन्न होता है इस शहरके दक्षिण ओर दो मीलके अंतरपर मगहाना नगर बसता है इसीके समीप सदर की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कचहरी और तहसील और थाना है सिक्खों के समय में यह एक छोटा सा गांव था अब ज़िले की कचहरी होनेसे ऊंगसे अधिक होगया है देसी कपड़े का यहांपर व्यवहार होता है और ऊंगसे ८ कोस के अंतर पर त्रिम्मों घाट पर जिहलन और चिनाव नदी आपस में मिलकर बहती है इस स्थान में सब जाती का अन्न उत्पन्न होता है परसों में जंगल है जिसको यहांके वासी वार कहते हैं यह बार रावी नदी के किनारे तक चला गया है दूसरी तहसील चिनओट की यह पुराना शहर है यह नगर रानी चंदन का बसाया हुआ है यथार्थ में इसका नाम चंदनवट था वट के अर्थ संस्कृत में घर के हैं अर्थात रानी चंदन का घर इस कारण अब इसको चिनओट कहने लगे पर इस रानीका वृत्तान्त विदित नहीं होता है कि किस समय में और किस राजा कि यह रानी थी खंडरों के देखनेसे यह निश्चित होता है कि जिस समय में यह शहर बसा हुआ होगा बहुत बड़ा होगा और जब लाहोर की नीव पड़ी संभव है कि यह नगर भी उसी समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

का है। इसके चारों ओर कोस कोस पर खंडहर और नीचे पृथ्वीसे निकलती हैं अब पंदरह हज़ारके लग भग घर और एक हज़ार दूकानें इस नगर में आबाद हैं एक कोस अंतर पर चिनाब नदी बहती है और राजघाट इसी स्थान पर है इस शहर में एक मसजिद और एक रौज़ा शाह बुरहान का बहुत अच्छा बना हुआ है लकड़ी के कलमदान और लकड़ी के संदूकचे आदि अच्छे बनते हैं चिनाब नदीके पार कालूवालके इलाके में जो शाहपुर के जिलेसे टूटकर इस तहसीलमें मिलगया है एक छोटा पहाड़ कगराना नामसे है इस पहाड़ की चोटीपर गुरु गोरख नाथ का स्थान बना हुआ है यहांके गद्दीनशीन को पीर कहते हैं इस पहाड़ीके चारों ओर जंगल है तीसरी तहसील शोरकोट की सन् १८६१ में मईके महीनेसे कादरपुर की तहसील टूट कर इस परगने में नियत हुई है यह शहर भी प्राचीन है पर इसका निश्चय वृत्तान्त नहीं मिलता एक क़िला बहुत ऊंचा यहांपर है जिसको यहांके मनुष्य भिड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ता है निकट एक बीच के उसका दौर फलता है वह एक मील से दूर आता है वृक्ष यहांपर अत्यंत है खजूरें यहांकी बहुत अच्छी और मीठी होती है इस तहसीलके अवान नामी एक गांव में सुलतान बाहू की एक खानकाह बहुत प्रसिद्ध है मुसलमान लोग यहांपर दूर दूर से आते हैं और अपनी पाव पूजा मे रहते हैं॥

मुज़फ़रगढ़

पहले यह ज़िला खानगढ़ के नाम से प्रसिद्ध था अब खानगढ़ के छोटे होने के कारण और मुज़फ़रगढ़ की बस्ती अधिक होने के ज़िले की कचहरी मुज़फ़रगढ़ में चली गई लाहौर से मुज़फ़रगढ़ दो सौ पचीस मील नैऋत्य कोण की ओर है इस ज़िले में तीन तहसील हैं एक मुख्य तहसील मुज़फ़रगढ़ की दूसरी तहसील सीतपुर की इस तहसील में अफ़ीम और कसुंभा उत्पन्न होता है और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कागज़ भी बनता है इस ज़िलेमें बाग़ बहुत हैं और आँब और खजूर भी उत्पन्न होते हैं तीसरी कोट अवदू की तहसील ॥

डेरह इस्माईलखां

कमिश्नरी

इस कमिश्नरी में तीन ज़िले मिले हुए हैं "डेरह इस्माईलखान — डेरह गाज़ी खां और ज़िलाबन्नूं यह कमिश्नरी तख्त सुलेमान नामी पहाड़ और सिंधु नदीके बीच में है और यहांके बासी सब मुसलमान हैं महाराजा रणजीत सिंह ने बड़ी कठनाई से इस प्रदेश को अपने आधीन किया था तिसपर भी भली भांति नहीं हुआ था

डेरह इस्माईलखां

यह नगर डेरह ग़ाज़ीखांकी उत्तर में लाहौरसेदो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सी पंद्रह मील सिंधनदी के पार पश्चिमकी ओरबस
ता है बिलोच जाती और पठान इसमें बसते हैं हिंदू
अत्यंतकम है यहांपर खजूरके वृक्ष बहुत हैं इसी
ज़िलेमें पेशावरसे सैंतीस कोसके अंतरपर सिंध
नदी के किनारे सेंधे नोनकी खानहै वह नमकका
पहाड़ सुफ़ेद पहाड़से आरंभ होता है और जिह
लम नदीके किनारे तक चलागया है यह स्थान
देखने के योग्य है किस निमित्त कि इस स्थानकी
पृथ्वीतो रक्तवर्ण और नमकका पहाड़ गुलाबी रंग
का दृष्ट आता है और नीचे इसके नदीका जल
स्फटिक अर्थात् बिलोरके समान सुफ़ेद सा चमक
ता है देखने वालोंको एक बड़ा आनंद प्राप्त होता है
कि नमकका व्यवहार इस जिले में बहुत होता है इस
जिले में पांच तहसील हैं प्रथम तहसील मुख्य
डेरह इस्माईलखान की दूसरी तहसील लैये यह
शहर लाहोरसे दोसौ मीलपश्चिम की ओर नैऋत्य
कोणको झुकता हुआ बस्ता है सिंधनदीके वामे तट
पर पांचकोसके अंतरपर है वर्षा ऋतमें जब नदी चढ़
तीहै तोबारह २ कोसतक पानी फैल जाता है इसकारण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वे मनुष्य जो नदीके निकट रहते हैं आठ आठ दस
दस हाथ लंबे लट्ठे पृथ्वीमें गाड़कर उसके ऊपर
छत बांध झोंपड़े बनाते हैं फूफलज़ई और
खिलज़ई और बारकज़ई और बिलोच
आदि अफ़ग़ान इस शहर में बसते हैं और शह
रके मध्यमें क़िला है और चारों ओर शहरके
खजूर और शहतूत और आंबके वृक्ष बहुत हैं
तीसरी तहसील दरयाखांकी चौथी कलाची
की पांचवी तहसील टांककी है जिसका बंदोब
स्त जागीरदार टांकके आधीन है इस जिलेमें
जो पृथ्वी अटकके पूर्व में है वह दो प्रकार की
है एक—थल—एक उस भूमिको कहते हैं
जो नदीके चढाव और आर्द्रता से जल पाकर
आर्द्र हो थल वह पृथ्वी है जिसपर वर्षाका
जल या कूप जल देकर खेती करते हैं इन दोनों
भेदकी पृथ्वी में गेहूं अन्न उत्पन्न होता है पर
थल वासियोंका निर्वाह गाय भैंसपर अधिक है
यहांके वासी बनचारी हैं जिस पृथ्वी में अच्छी
हरयावल पाते हैं वहांपर जा बसते हैं थल में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तर्बूज उत्तम उत्पन्न होता है इस ज़िले में बड़े क़स्बे अटकके पूर्व में यह हैं लैया — कोटसुलतान — करोड़ — चौबारह नवाकोट — भक्कर दरयाखां — तौनक — क़िलामनकेरह — हैदराबाद — जंडोवाला — इनशहरोंमें पश्म और ऊनका व्यवहार होता है वह भूमि भाग जो अटकके पश्चिम में विद्यमान है उसको दामान कहते हैं यहांकी पृथ्वी भी नदी और वर्षा में उर्वरा होती है गेहूं और बाजरा इस देश में अत्यन्त होता है इस पृथ्वी में कूए नहीं हैं कारण इसका यह है कि जो कूआ खोदते हैं तो पानी कड़ुवा निकलता है इस निमित्त गर्मी के समय में यहांकेवासी अपने स्थान छोड़कर चारों ओरकी बस्तियोंमें और ज़िलअ बन्नूकी सरहद में जा बसते हैं और इस ज़िले में एक पहाड़ है जिसको गंडक कहते हैं वह निःसंदेह शीतल है उसपहाड़पर बहुधा साहब लोगों ने मकान भी बनवाये हैं और सरोबर और शीतल जलके कुंड भी निकलवाये हैं उसपर बहुधा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बसती हैं वाहूके इलाके में रात्रिके समयझाऊ
के वृक्षोंपर जो ओस पड़ती है वह जमजाती
है यहां के वासी वह ओसवृक्षोंपर से इकट्ठी
करके शक्करकी जगह खाते हैं वह ठीक ठीक
तुरंजवीन औषधिके सदृशहोती है पर भोजन
के समय झाऊके पत्तोंकी वास उसमें से आया
करती है यहांके लोग उसको शकलूक कहते हैं
गेहूं ज्वार और बाजरा भी बहुत उत्पन्न होता है
कूप इस जगह भी नहीं हैं पहाड़ी नालोंसे पृथ्वी
तर रहती है और रेतली भूमि वर्षासे और जोपृथ्वी
पहाड़से अंतरपर है वह बहुधा चाही है इस
तहसील में और तहसीलोंकी तुल्य बंजर
पृथ्वी थोड़ी है बिलोच लोग यहांपरधनवान्
और प्रतिष्ठित हैं जिनको तुमन्दार बोलते हैं
दूसरी तहसील हड़नद है इसमें प्रसिद्ध कसबे
यह हैं दाजल —— जामपुर —— हाजीपुर ——
हरनद —— दाजलके इलाके में ग्रीष्मऋतु में
ऐसी लू चलती है किउसके प्रहारसे कई मनुष्य
मरजाते हैं इस निमित्त वह मनुष्य इस रोगके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मिटाने के लिये प्याज़ खाने का अभ्यास करते हैं
और इस इलाके में कूप जल कड़वा निकलता
है पहाड़ी कुडों का पानी एक तालाब में आकर
इकट्ठा होजाता है उसी जलसे यहांके मनुष्य
अपनी अवस्था व्यतीत करते हैं और जाल
के दरख्त भी यहांपर बहुत हैं जालका
फल जिसको पीलू कहते हैं गर्मी के मौसममें
यहांके निर्धन मनुष्य खाते हैं केवल दोमहीने
यहफल रहता है जामपुर की भी यही दशा है
इस क़सबे के पास शोरह और सज्जी उत्पन्न
होती है यहांकी पृथ्वी खारी है केवल हाजीपुर
के क़सबे में मीठा पानी है वहांपर खेती अत्यन्त
होती है और भांति भांति की तरकारियां भी
उत्पन्न होती हैं नील और पोस्त और गेंहूं
इस इलाके में बहुत उत्पन्न होती है शहर
हरनड़ पहाड़ से दोकोसके अंतरपर बसता है
यहांपर जंगल बहुत है और इस इलाके का
चावल प्रसिद्ध है यहांपर हर प्रकार का शिकार
मिलता है एक क़िला सावनमल का बनाया हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मनुष्य आबसते हैं इस में यह तहसीलें हैं डेरह खास कलांची टांक इसके पश्चिमकी ओरके बड़े कसबे यह प्रसिद्ध हैं पहाड़पुर यहांपर पहले समय में मनुष्यों को विद्याकी बहुत लालसाथी कड़ीखुर —— बलूट —— नपाला यह टांक की तहसील में बहुधा छोटे छोटे गांव हैं केवल टांक नगर जागीरदारके बसनेके कारण बड़ा और प्रसिद्ध है इस शहर में थोड़ी सरकारी सेना भी रहती है इस जगह लोहा और बूरा बहुत बिकता है इस इलाके में भी कोई कूंआ नहीं है एक नहर जो दरहनराम से जिसको गोरह कहते हैं उसके हेतुसे हरा रहता है यहांके बासी मुसलमान बहुत हैं हिंदू कम हैं इस दामान का खर्बूजह दूर तक प्रसिद्ध है यहांके लोग गधे और बैलपर बहुधा सवार होते हैं ॥ +

डेरहगाज़ीखां

लाहौर से दोसौ मील नैऋत्यकोण में सिंधु नदी के दाहने किनारे पर बसाता है इस ज़िले में चार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तहसील है पहली तहसील डेरह ग़ाज़ीखां कीइस के चारोंओर हरयावल और खजूरोंके वृक्ष बहुधा हैं सिंधनदी इस शहरसे एक कोस की दूरी पर है इस नगर के समीप एक नाला है जिस्को कस्तूरी कहते हैं गर्मी केदिनों में इस शहरके वासी दिनमें उस नालेपर सायंकालतक इकट्ठे रहते हैं मेलेके समान प्रजाका संघट्ट रहाकरता है श्रावणके महीने अन्ततक यही आनंद रहाकरता है इस तहसील में एक क़सबा सखीसरवर नामहै उस क़सबे में सखीसरवरकी खानकाह है इसखान काह को सारे पंजाबके वासी क्या मूर्ख हिंदू और क्या मूर्ख मुसलमान सब मानते हैं और उस में निश्चय रखते हैं मार्च महीने से एप्रिलके अंत तक बराबर इस दरगाह पर मेला रहता है बहुत दूर दूर के लोग वहांजाते हैं और सरवर के नाम का बोला हुआ चढ़ावा चढ़ाते हैं इस पर गने में पारू पहाड़ विद्यमान है जिस में से संग जराहत और फटकरी और सज्जी निकलती है बिलोच जाति और हजयानी जाति इस पहाड़ में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस जगह है उस में अवसरकारी सेना रहती है और ऊनी शतरंजी भी यहांपर बनती हैं तीसरी तहसील कोट मिठ्ठनकी है यह नगर सिंधनदी के किनारे पर है यहां बंबई से व्यवहार निमित्त माल आता है प्रसिद्ध क़स्बे इसके यह हैं मुख्य कोट मिठ्ठन दाजलपुर फ़ाज़िलपुर मुरोजां इस इलाकेकी भूमि बहुत अच्छी है यहांपर संपूर्ण पदार्थ उत्पन्न होते हैं पर चावल अत्यंत होते हैं और ईसबगोल और शाकलू भी यहां उत्पन्न होता है पिछले समय में कोट मिठ्ठनके समीप मोती भी निकलते थे यहां जंगल बहुत है और कल्लर धरती कम वृक्ष बहुत हैं मौज़ नूरपुर के समीप जंगलमें एक दरयाई जानवर हाथ आता है जिसको लूदर अर्थात ऊदबिलाव कहते हैं उसके शरीरपर चमड़ा बहुत होता है लोग उसको मारकर उसके चमड़ेकी पोस्तीन बनाते हैं और वह पोस्तीन मटिले रंगकी होती है और रोम उसके अत्यन्त कोमल होते हैं उसकी एक खाल ३) दो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रुपये को बिकती है और दाजनके पहाड़ में गोरखर और गड बहुत मिलता है गड़का रंग हिरन का सा और शाख बकरी का सा और नेत्र भेंड़ के नेत्रों के समान होते हैं चौथी तहसील संग्घर की संग्घर नाम एक नदी का है जो पहाड़ से आती है उसी के नाम से यह सारा इलाका प्रसिद्ध होगया निदान इसी नदी के जल से इस तहसील का सारा इलाका हरा रहता है तहसील का स्थान कसबे लंगरोतह में है इस तहसील की भूमि खारी है और चाही कम है ज्वार और गेहूं की खेती बहुधा होती है इस इलाके का घोड़ा बहुत अच्छा होता है बिलोच जाति के मनुष्य यहां के नंबरदार हैं एक क़सबा तोस इसी तहसील का है जहां पर हज़रत शाह सुलेमान साहब की क़बर है पचास हज़ार रुपया इस खानकाह के बनवाने में खर्च हुआ है इस जगह बहुधा निहारवे की बीमारी होजाती है॥

ज़िला बन्नू

पहले यह तहसील डेरह इस्माईलखां की थी पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

२४ दिसंबर सन्न १८ ६० ईस्वी से ज़िला लैया ^
टूटकर बन्नूनाम ज़िलेका निश्चय हुआ और यह
चार तहसील उसके आधीनकी गई एक तहसील
मुख्य बन्नूकी इस तहसील में खुरम नदीका जल
जगह जगह और गांव गांव वरन घर घर में ^
बहता है इस निमित्त यहां सब अन्न उपजते हैं
धरती यहांकी धन उपजाऊ है और घास उत्पन्न
होती है इस परगने में एक भेदकी घास जिसको
सफ़ताला कहते हैं गाय भैंस और घोड़ों के ^
निमित्त बोते हैं उससे पशु बहुत मोटे होते हैं
और एक बेर उसे बोकर चार चार बेर खेत
काटकर खिलाते हैं जब खेतकाट चुके फिर
वह थोड़े दिनोंमें वैसी ही बढ़जाती है फिर ^
काट लेते हैं इसी प्रकार चार बार खेत काटते हैं
इसका बीज राई के सदृश होता है दिलीप गढ़
के पूर्व में गोरेवाला और घामसखेल और ^
चंदरूखेल में दो वा तीन गज़ भूमि खोदने से जल
निकल आता है घामसखेल और मरदी खेल को ^
खुरमारवजूर प्रसिद्ध हैं दिलीपगढ़ से जो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सड़क लिक्खी को गई है चार कोस तक बराबर दोनों ओर डाली अर्थात् शीशम और तूत के वृक्ष लगे हुए हैं दिलीपगढ़ में बहुधा लोहा—ऊन लकड़ी— और मेवा में से अखरोट और दाखका क्रय विक्रय होता है आंब अनार शफ़तालू अंजीर इस पृथ्वी में अत्यन्त हो सकता है एक समय दिलीपनगर में अंजीर और आंब लगाए गए थे तो बहुत मिए और सुस्वादु काबुल और कंधारके अंजीरों के सदृश उत्पन्न हुए पर इस देशके जमीदारोंको ऐसे पदार्थोंका उत्साह नहीं है दूसरी तहसील लक्की मूरत की इस तहसील की भूमि रेतली है सारे में रेगिस्तान है परन्तु शक्तिमान् ईश्वरकी शक्तिसे इस रेगिस्तान में भी गेहूँ और चना अत्यन्त और अत्युत्तम उपजता है और ऐसा बहुत होता है कि देरह जात और मुलतान और कोट मिठ्ठन के यहांसे ले जाते हैं और एक बड़ा आश्चर्य यह है कि ऊंटनियों के दूधका घी भी यहां पर निकालकर काममें लाते हैं और बेचते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हैं यहां भी कूए नहीं हैं नदीके जलसे खेती होती है इस कंवीलह नाम नदीका जल दस दस कोस से आकर लेजाते हैं और कई एक जगह बर्षा का जल किसी तालाब में रोक रखते हैं इसी हेतुसे नारवह अर्थात रिशतह की बीमारी इन लोगों को बहुधा होजाती है तीसरी तहसील ईसाखेलकी इस तहसील में अर्द्ध भूभाग खुरम नदीसे आर्द्र रहता है और शेष पृथ्वी बारानी है काला बाग़ में सुफ़ेद और लाल नमक की खान है और फटकड़ी भी बहुत निकलती है यह एक सौदागरी का बंदर है सौदागर लोग अनेक प्रकार का माल नौकाओं पर यहां लाते हैं और यहांसे और ठौर लेजाते हैं चौथी तहसील मियाँवाली इस तहसील का आधा इलाक़ा सिंध नदी के किनारे पर है वहांकी पृथ्वी उस नदी से सजल रहती है और शेष आधा थल है जो वर्षा होवे तो फ़सल उसमें होती है पर बाजरा और ज्वार अच्छा होता है इस इलाके में खेती कम होती है बहुधा मनुष्य ऊंटों और गौओं और महिष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आदि चारपायों पर निर्वाह करते हैं और इसी प्राप्ति पर सरकार को भी देते हैं॥

जिहलमकीकमिश्नरी

इस कमिश्नरी में चार ज़िले हैं जिहलम रावलपिंडी गुजरात शाहपुर॥

जिहलम

यह शहर लाहौरसे एक सौ मील वायव्यकोण में पश्चिमको झुकताहुआ जिहलम नदी के पार बसता है इस शहरकी बस्तीकुछ बड़ीनहीं है परज़िले का स्थान और राजमार्ग होनेसे उसकी बस्ती नित्य अधिक होती है और दोतीन नामी स्थान यहांके यह हैं एक रोहतास का क़िलायह क़िला जिहलमसे आठकोसकी दूरीपर वायव्य कोण की ओर रावलपिंडीके मार्ग में एक पहाड़ के ऊपर विद्यमान है इसकी बनावट बहुत पक्की है एक मील लंबा और आधामील चौड़ा है और शाह बादशाह औरफिर सलेम शाह ने इस क़िले को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लाहोर से १६० एकसौ साठ मील उत्तर में
नैर्ऋत्य कोण की ओर झुकता हुआ कोट के बीच
बसता है यह ज़िला बड़ा लंबा चौड़ा है इसकी
पूर्वी सीमा जिहलम नदी है और पश्चिम
सीमा सिंध नदी और उत्तरकी सीमा ज़िला
हज़ारा है और दक्षिणकी सीमा में जिहलम
का ज़िला मिला हुआ है सिक्खों के राज्य से पहले
बहुत दिनोंतक यह देश चकरों के राज्य में था
वे लोग अपने तईं केकाऊसकयानी की संतान
से बतलाते हैं पुराने इतिहासों में इस वंशका
वर्णन विस्तार पूर्वक लिखा है फिर रणजीत
सिंह की आज्ञामें आया अबतक उन चकरों
की संतान मौज़ा कहोटा और मौज़ा गटनी में
विद्यमान है इस जाति में से सबसे उत्तम राजा
कहलाते हैं और दूसरे मीरज़ा तीसरे साहू
इस ज़िले में यह छह इलाक़े मिले हुए हैं
पुठवार छुचखार चंडाल मुलूक खेप मरवड़
रावलपिंडीकी तहसील और कलर और
सरवू सब पुठवाड़का देश कहलाता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और हस्न अवदाल की तहसील में दो इलाके मिले हुए हैं एक छच दूसरा खातर छचके इलाकेके बराबर इस ज़िलेमें दूसरा कोई नहीं है क्यों कि वह मैदान है और उसकी पृथ्वी उर्वरा है इस इलाके में अफ़ग़ान बसते हैं और पश्तो बोली बोलते हैं और खातर में खट्टरी लोग बसते हैं इस निमित्त उस इलाके को खातर कहते हैं पिंडी घेप की तहसील में जंडाल और मखड़ का इलाका मिला है और इस इलाके के घेप नाम होनेका कारण यह है कि यह प्रदेश घेऊका बसाया हुआ है इस ज़िले में सात तहसील हैं एक तहसील मुख्य रावलपिंडी पहले उसकी बस्ती कुछ उत्तम नथी पर अब दिनोदिन वृद्धिपर है दोनो ओर पक्की दूकानें बनकर बाज़ार बहुत विस्तृत और शोभायमान बना है इसनगर में मनुष्य बहुधा नदी का जल काम में लाते हैं और बड़ी सड़क जो पेशावर को जाती है शहरके अंदर को गई है नवीन बाज़ार बहुत अच्छा बसा है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शहर के मध्य में शाहदौला का एक रोज़ा है सदैव जुमेरात को वहाँ मेला हुआ करता है नामी शहर इस ज़िले में यह हैं अटक हसन अबदाल प्रसिद्ध पंजासाहब कल्लर सखू शाहोंका नूरपुर सैयदपुर दूसरी तहसील हजरु यह शहर भी इस ज़िले में प्रसिद्ध है तीसरी तहसील पिंडी घेप की जिस का वर्णन उपर हो चुका है चौथी फ़तहजंग की पांचवीं तहसील गुजरखां की छठी कोहमरी की तहसील यह पहाड़ सरकार अंगरेज़ी के राज्य में मिस्टर जानपारंटन साहब बहादुर कमिश्नर ने बसाया था अब बहुत सी कोठियां साहब लोगोंकी वहां बनगई हैं गर्मी की ऋतु में बहुधा साहब लोग वहांपर आगमन करते हैं यह पहाड़ शीतल और सुखदायी स्थान है सातवीं तहसील कहोटा ॥ +

गुजरात

लाहौर से ७० मील दूर चिनाब नदीके पार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यह नगर बसा है इस नगर का कोट चारों ओर
से पक्का बना हुआ था राजा ध्यान सिंह की
बनवाई हुई बहुत रमणीय एक बारहदरी
उत्तर में बाहर इस नगर के है और दूसरी
महाराजा रणजीत सिंह की जिसमें ज़िले का
हाकिम रहता है और नगर के मध्य में
अकबर बादशाह का बनाया हुआ एक क़िला
और बावली और हम्माम है और क़िलेमें
अब जेलखाना है और शाह दूला की बहुत
प्रसिद्ध एक खानकाह एर्वकी और यहांपर
है इस ज़िलेके उत्तर भाग में बाजरा बहुत
उत्पन्न होता है और यहांकी तलवार भी प्रसिद्ध
है इस ज़िलेमें क़सबे और भी नामी हैं एक
जलालपुर पुराना नगर है शालबाफों के
कारखानों से बहुत नामी होगया है दूसरा
कुंजाह कि वह भी मुख्य नगर है गनीमत
नाम फारसी का कवीश्वर इसी स्थान का रहने
वाला था इस ज़िलेमें तीन तहसील हैं एक
मुख्य तहसील गुजरात की दूसरी खारयां की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तीसरी फालियाकी इस ज़िलेका जल पवन अच्छा है ॥ +

शाहपुर

जिहलम नदीके किनारेपर यह क़सबा विद्यमान है यही स्थान ज़िलेका भी है और इसी क़सबेके पूर्व में छावनी भी है परंतु नगर की बस्ती कुछ अच्छी नहीं है और जल पवनकी भी बुराई सुन्ने में आती है यह नगर लाहौरसे एकसौ पच्चीस मील के अंतर पर है इस ज़िले में साईवाल — भेरह — मियानी — और खुशाब यह प्राचीन स्थान हैं और उनकी बस्ती बहुधा पक्की है और — साईवाल में लकड़ीका काम बहुतही सुंदर होता है जैसे पलंगके पाए और डिबियां आदि और इस ज़िले में भेड़ी अत्यन्त करके होती हैं और उनकी ऊन बहुत कामकी वस्तु है इस में तीन तहसील हैं साईवाल — भेरह

Digitized by eGangotri

जावह ॥ *

पेशावरकीकमिश्नरी

इस में तीन ज़िले हैं पेशावर–कोहाट–हज़ारह

पेशावर

इस ज़िलेके चारोंओर पर्वत और मध्य में मय
दान है मुसलमान लोगबसते हैं पश्तोवाणीबोल
ते हैं लाहोरसे दोसौपच्चीसमील दूर वायव्य
कोणकी ओर सिंधुनदीके पार चवालीसमील
के अंतरपर बसता है समुद्रके धरातलसे एक
सहस्रमील ऊंचा है इस स्थान में मुसलमानोंके
सारे ईरान आदिदेशों से सौदागरी के निमित्त पदार्थ
आते हैं इसनगरकी सराय बहुत उत्तम है छाव
नी भी यहांपर बड़ी है पेशावर नगरकी बस्ती
बहुत सुंदर और सुहावनी है मकान बहुत
बड़े और बाज़ार बहुत अच्छे बने हुए हैं
सिक्खोंके राज्य में इसकी बड़ी शोभा हुई है
काबुलकी ओरसे इसस्थान में सौदागरीके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

निमित्त बहुत वस्तु आती हैं मुख्यता से अनेक प्रकार के मेवे जैसे बादाम — अंगूर — सेव जलालाबादी अनार — पिस्ता — दाख — सरदह विलाइती गन्ने और इनसे सिवाय सरदी के दिनों में पोस्तीन — समूर — संजाब — आदि और सुतरी चोगे और गाय घोड़े अत्यन्त आते हैं और बोली यहां की यद्यपि पश्तो है पर उर्दू बोली भी अच्छी समझते हैं पानी की नहर नगर में भी फिरती है और नगर के चारों ओर भी बहती है इस नगर के चावल अत्युत्तम सौगात होते हैं मलूल के इलाके में उन्नाब अत्यन्त होते हैं हवि की तहसील का और हश्तनगर की तहसील का गुड़ प्रसिद्ध है पेशावर की लुंगी बोरीया और पंखियां मुख्य कर के प्रसिद्ध है और इस नगर का दुंबा बहुत अच्छा और स्वादु होता है युसफ़ज़ई के इलाके में उत्तम जाति का तंबाकू उत्पन्न होता है जो सारे भरतखंड में प्रसिद्ध है वह दूर दूर के देशों में एक सौग़ात की भांति जाता है इस नगर के यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्थान प्रसिद्ध हैं २ गोरखतरी — गुरु गोरख-
नाथका मंदिर है अब इसमें अंगरेज़ी पल्ट
टन रहती है ३ बाला हिसार का क़िला यह
पक्का बना हुआ है सरकारी मेग्ज़ीन इसमें
रहता है ४ अलीमर्दानखां का बाग़ — ज़िलेकी
कचहरी इस में होती है ५ शालामार बाग़
६ और बादशाही बाग़ — यह दोनों बाग़
सिक्खों ने उजाड़ दिये थे अब केवल खंडर हैं
७ वज़ीरी बाग़ — यह बाग़ सैर के योग्य है।
और अनुपमेय है ८ जामअ मसजिद —
इसकी बनावट स्तुति योग्य नहीं है इस ज़िले
में छह तहसील हैं एक मुख्य पेशावर की।
दूसरी तहसील खालसा खुटक की तीसरी हावे
की चौथी दाऊद ज़ई की पांचवीं यूसफ़ ज़ई।
की छठी हश्तनगर की ॥ ❀

ज़िला कोहाट

कोहाटका ज़िला पेशावरके दक्षिण की ओर है
और लाहौरसे वायव्यकोण की ओर दोसौ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पंदरह मील दूर है इस ज़िले में एक जातीका
पत्थर होता है उसको पानी में उबालकर उसकी
मोमंयाई बनाते हैं प्रसिद्ध कसवे उसके यह
हैं मुहम्मदज़ई का कसवा कर्क— वहादरखेल
लतमीर— वरनात— तरोज़ई— द्मसमंद
टल— पहाड़ में विद्यमान हैं और हंगू—
उस्तरज़ई— कचई— मड़ी यह क़सबे तीराह
पहाड़के नीचे बसते हैं कोहाट नगर में एक
सरकारी क़िला विद्यमान है उसके नीचे जलके
कई झिरने वहते हैं गरमी में इन झिरनोंका
ऐसा शीतल जल होता है कि एक गिलासपानी
एक श्वास नहीपिया जाता और शीतकाल में
यह जल बड़ा गरम होता है और उसके
बड़े बड़े गांव मुहम्मदज़ई तो ग़दहूदह
प्रसिद्ध है और शाकरदरह और खोरह
यह प्रसि क़सबे हैं इस ज़िलेमें दो तहसील
हैं एक तहसील कोहाट शाहरकी दूसरी तहसी
ल हंगुकी इस ज़िलेमें नमक अत्यन्त उत्पन्न
होता है और हंगुकी तहसील में सौग़ातके योग्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चावलभी उत्पन्न होते हैं ॥+

हज़ारा

लाहौरसे उत्तर में एकसौ अस्सीमील वायव्य कोण॰
को झुकता हुआ बसा है पहले समय में यह॰
ज़िला एक देशके समान गिना जाता था जो आज
तक हज़ारेका देश प्रसिद्ध है सिक्खोंके राज्यसे॰
पहले मुसलमानों के आधीनथा सन् १८४६
ईस्वी में कश्मीरकेसाथ महाराज गुलाब सिंहके
हाथ बेचागया जब उस्से भी बंदोबस्त नहुआ
तब फिर लाहौर के राज्यमें मिलाया गया पहले
इस देशकी राजधानी नगर हरीपुरथा जो कि
अब इस ज़िलेकी एक तहसील है और यह॰
नगर हरीसिंहका बसाया हुआ है और दोमें
आबादहैं इस्के बीचमें एक और नामी नदी॰
बहती है जिस्केकारण साराटेश हरा भरा रहता
है जो जो नगर इस नदीके किनारे पर बसते॰
हैं उनमें बहुत पैदावारी होती है गन्ने—
हलदी— और घास आदि बहुताइतसे॰

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उत्पन्न होते हैं उसके समीप सिकंदरपुर क़सबा बसता है उस्की प्राचीन बस्ती है इन दोनों नगरों के मध्य में हरकिशनगढ़ का क़िला है अब इस ज़िले में दो तहसील हैं एक हरीपुर की दूसरी मानशहरे की ॥ ❋

यह सब अंगरेज़ी राज्य का इलाका समाप्त हुआ

अब जंबू और कश्मीर देश का संक्षेप वर्णन लिखा जाता है ॥ ❋

जंबू

यह नगर पहाड़की ऊंचाई पर है इस पहाड़ के नीचे अग्निकोण की ओर एक नदी बहती है उसका नाम तवी है यह नदी रजोड़ी के पहाड़ से निकलती है जो कश्मीर के मार्ग में विद्यमान है शहर का हाल यह है यद्यपि दूर तक बसता है पर उसकी बस्ती कुछ शोभायमान नहीं है केवल एक स्थान जिस्को राजा की मंडी कहते हैं और जहां दरबार भी होता है अवश्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देखनेके योग्य है महाराजके महल उसीके समीप बनेहुए हैं नगरके बीच बहुधास्थानों पर पुराने मकान और मसजिदें और मुसलमानोंकी क़बरें बहुत हैं पीर मिट्ठाकी एक खानकाह इसशाहर में बड़ी नामी है चमड़े के पाजामे यहां अच्छे बनते हैं ॥

क़िला

इसनगरका किलाकुछ पक्का और लड़ाई के योग्य नहीं है राजाके कुछ थोड़े से सिपाही वहांपर रहाकरते हैं परन्तु इस क़िले और नगरके चारों ओर ऐसा सघन बन है कि जो आने जानेका मार्ग रोकदिया जाय तो यह जंगलही किलेके समान है इस देशकी न्याय वा राजनीति केवल राजाकी आज्ञा है महसूल और राजकरकी कठोरता से हर एक मनुष्य दुःखी और रोता है यहांपर दो स्थान प्रसिद्ध हैं एक पुरमंडल जिसको महाराज गुलाबसिंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ने हज़ारों रुपये खर्चकरके बनवायाथा दूसरा वैष्णवी देवी का स्थान यहांभी बड़ा मेला हुआ करता है॥

कश्मीर

कश्मीर एक देशका नामहै उसकी राजधानी श्री नगर है इस कश्मीर देशमें एक बड़ा लंबा चौड़ा मैदान कोसोंतक चलागया है उसमें सैकड़ों कसबे और गाँव बसेहैं और इस देशके चारोंओर पहाड़ोंकी श्रेणी मंडल के सदृश विद्यमान है इन पहाड़ोंके घिरे हुए होनेके कारण और देशोंसे इस प्रदेश में आने जानेके लिये केवल चार पांच रास्ते हैं और राजाकी ओरसे इनमार्गों पर पहरुवे नियत रहते हैं कि कोई मनुष्य राजाकी आज्ञा बिना कश्मीर में नजासके औरनवहांसे बाहर निकल सके इसीकारण यह कहावत प्रसिद्ध है कि कश्मीर क्या है मानों बिना बेड़ी के क़ैद है समस्त कश्मीर देश हरयालीसे अत्यंत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE